सोशल मीडिया से जुड़ें
NewsTransportVishesh
Digital Edition

न्यूज ट्रांसपोर्ट विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

वर्ष 1, अंक 14, नई दिल्ली, सोमवार,
07 नवंबर 2022, पेज 8

NEWS NTV TRANSPORT VISHESH
www.newstransportvishesh.com
सबसे तेज, सबसे पहले
आपको पहुंचाये
परिवहन क्षेत्र की सभी जानकारियां
09212122095
09811732095

03 BJP नेताओं ने प्रदूषण को लेकर 11 मूर्ति पर किया प्रदर्शन
05 पेट्रोल डीजल की बढ़ती कीमतों की चिंता करें खत्म !
08 सड़क हादसे में पूर्व आईबी अधिकारी आरएन कुलकर्णी की मौत,

आज का सुविचार

रिश्तों की कदर भी पैसों की तरह ही करनी चाहिए क्युकि दोनों को कमाना मुश्किल है पर गँवाना आसान।।

इनसाइड

कार्तिक मेला के द नि श्रद्धालुओं के लिए परिवहन निगम चलाएगा 1890 अतिरिक्त बसें

लखनऊ। आठ नवंबर को पड़ने वाले कार्तिक मेला में गंगा स्नान के लिए श्रद्धालुओं के आवागमन को आसान बनाने के लिए परिवहन निगम ने कुल 1890 अतिरिक्त बसों की व्यवस्था की है। यह बसें अलग-अलग शहरों से चलेंगी। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने श्रद्धालुओं को यातायात संबंधी किसी भी प्रकार की परेशानी न हो इसके कड़े निर्देश दिए हैं। निगम के प्रबंध निदेशक संजय कुमार ने बताया कि मुख्यालय स्तर के अधिकारियों एवं समस्त क्षेत्रीय अधिकारियों के अवकाश तत्काल प्रभाव से निरस्त कर दिए गए हैं। सभी अधिकारियों को तत्काल अपने कार्यस्थल पर अनिवार्य रूप से उपस्थित होने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि कार्तिक मेले के अवसर पर 1890 बसें परिवहन निगम चलाएगा। इसके अलावा भीड़ के दृष्टिगत अतिरिक्त बसों की व्यवस्था भी की जाएगी।

24 घंटे कंट्रोल रूम रहेगा चालू

प्रबंध निदेशक ने बताया कि गंगा स्नान पर्व को देखते हुए नौ नवंबर तक की अवधि में यात्रियों के अत्यधिक आवागमन को देखते हुए उनकी सुविधा के लिए बसों के संचालन एवं बस स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं की दैनिक समीक्षा के लिए निगम मुख्यालय में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। यह चौबीस घंटे चलेगा। कंट्रोल रूम के नंबर 0522-2629857 पर यात्रियों को बसों से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध रहेगी। उन्होंने कहा कि बस स्टेशन पर साफ-सफाई, शुद्ध पेयजल, शौचालय व यात्रियों की बैठने की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी।

ई रिक्शों के खिलाफ़ क्यों नहीं करते कार्यवाही, परिवहन विभाग और प्रवर्तन शाखाए

- परिवहन विभाग की मेहरबानी से 90 प्रतिशत से अधिक ई रिक्शे चलाने वाले चालक बिना लाइसेंस वाले है।

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग दिल्ली सरकार के वोट बैंक बनवाने में मददगार बनने के लिए माननीय उच्च न्यायालय द्वारा ज़ारी दिशा निर्देश/आदेश को दरकिनार कर रहे हैं।उच्च न्यायालय के दिशा निर्देशों में बिना रजिस्टर्ड ई रिक्शा दिल्ली में कही चलता नज़र नही आना चाहिए पर दिल्ली की सड़को पर हर गली कूचे में जनता बिना पंजीकृत ई रिक्शे देख सकते हैं।

उच्च न्यायालय के दिशा निर्देश के तहत दिल्ली की सड़को पर एक भी ई रिक्शा बिना फिटनेस, बिना इंश्योरेंस के नही चलनाचाहिए पर परिवहन विभाग की मेहरबानी से 80 प्रतिशत से अधिक ई रिक्शे बिना फिटनेस, बिना इंश्योरेंस के चल रहे हैंउच्च न्यायालय के दिशा निर्देशों के तहत दिल्ली की सड़को पर एक भी ई रिक्शा चालक बिना ड्राइविंग लाइसेंस के नही होना चाहिए पर परिवहन विभाग की मेहरबानी से 90 प्रतिशत से अधिक ई रिक्शे चलाने वाले चालक बिना लाइसेंस वाले है।

उच्च न्यायालय के दिशा निर्देशों के तहत दिल्ली की मुख्य सड़कों पर ई रिक्शो के चलने पर पूर्ण प्रतिबंध हैं पर परिवहन विभाग की मेहरबानी से दिल्ली की मुख्य सड़कों पर जाम लगवाने और बेखौफ खड़े होने/ चलते नज़र आते हैं।

अब दिल्ली में ई रिक्शा वालो ने मुंह मांगा किराया भी लेना शुरु कर दिया जिसके खिलाफ़ दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्राओ ने मुहिम छेड़ी।

दिल्ली परिवहन विभाग को दिल्ली की जनता के हित को ध्यान रखते हुए दिल्ली सरकार के वोट बैंक बनवाने में मददगार बनने के स्थान पर जनहित में तत्काल प्रभाव से प्रवर्तन शाखा परिवहन विभाग और दिल्ली यातायात पुलिस को ई रिक्शा चालकों के खिलाफ़ मोटर वाहन नियम के अंतर्गत सख्त कार्यवाही करने के दिशा निर्देश जारी करे।

दिल्ली उच्च न्यायालय दिल्ली सरकार से नाराज

एनटीवी संवाददाता

नई दिल्ली । दिल्ली उच्च न्यायालय दिल्ली सरकार से नाराजदिल्ली उच्च न्यायालय में आगंणवाडी पर्यवक्षको द्वारा दायर याचिका समान कार्य समान वेतन ना देने पर कोर्ट ने दिल्ली सरकार पर नाराजगी जाहिर की और गंभीरता से लेते हुए दिल्ली सरकार और अन्य पक्षकारो को अपना जवाब जल्द दायर करने के आदेश जारी किए। उच्च न्यायालय में अब इसकी सुनवाई 16 नवम्बर को होगी । दिल्ली के अन्य सभी विभागों सरकारी कार्यालयों में कार्यरत कान्ट्रेक्ट एवम ठेकेदारो द्वारा लगे कर्मचारियों को भी अपने हक को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए ।

दिल्लीवासी अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं तो दे अपने विचार/ जवाब

संजय बाटला

नई दिल्ली। समस्याओं का समाधान करने के लिए जो जरूरी प्रबंध करने की आवश्यकता हो उसकी जगह दूसरो पर इल्जाम लगा कर और फ्री का लालच देकर जनता का मुंह बंद करवाकर सत्ता में विराजमान द्वारा जनहित सम्भव है ?रूस में भी 100 साल पहले इसी फ्री के लालच ने सत्ता परिवर्तन कर दिया था ओर आज तक वहा की जनता इस गलती का हर्जाना अदा कर रहे हैं।

आज दिल्ली अनगिनत समस्याओं से जूझ रहा है जो आम आदमी अच्छी तरह जानती है। उनमें से किसी एक भी समस्या का समाधान करने का दिल्ली सरकार द्वारा प्रयास नही किया गया उसके विपरित जनता को गुमराह करने के लिए सभी आवश्यक समस्याओं के लिए दुसरे को जिम्मेदार ठहराते हुए अपने कर्तव्य से विमुख हो रही हैं और जनता विरोधाभास ना करें उसके लिए बाहरी राज्यों से लोगो को दिल्ली में अपना वोट बैंक बनाने और फ्री का डंडा दिखाने में लगी है।

स्वास्थ्य से जुड़े सर्वे के आधार पर दिल्ली वालों की आयु से 10 वर्ष कम और भयंकर बीमारियां होने की आशंकाएं जताई गई हैं।

कुछ सौं रुपयों की फ्री बिजली-पानी के चक्कर मे दिल्ली की जनता अपने जीवन से समझौता कर रही है। अगर दिल्ली के यही हालत रहे तो दिल्ली में घुटकर मरने या दिल्ली को छोड़कर किसी अन्य राज्यो में जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहेगा।

दिल्ली का यह हाल दिल्ली की सरकार द्वारा उत्पन्न किया है क्या इस पार्टी की सरकार आने से पहले कभी दिल्ली में सुना था, ओड इवन, दिवाली पर बम पटाखे जलाने से मनाही या प्रदुषण की मार ।

राज्य में आज ना कोए सड़क सुरक्षित है चलने के लिएना कहीं सफाई व्यवस्था है ना ही करोड़ों रुपए खर्च कर यमुना नदी में पानी साफ मिला

ना दिल्ली सरकार की और से एक भी नियमित सरकारी नौकरी दी गई

ना ही किसी विभाग में करप्शन पहले से कम हुआ

ना ही दिल्ली के छोटे रोजगार करने वालों पर रोजगार रहा

ना दिल्ली में कोई सुरक्षित

हा, दिल्ली की हर गली कूचे और हर जगह 24 घण्टे नशे उपलब्ध जरूर हुए। दिल्ली की जनता अगर फ्री के लालच में अभी भी अपने मुंह बंद रखेंगे तो अच्छा है

1.बीमार होकर तड़फ तड़फ कर मरने,

2.सड़क दुर्घटना से मरने,

3. किसी नशे बाज के हाथों मरने,

4. अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्ति के हाथो से मरने से अच्छा है दिल्ली छोड़नी ।

अभी छोड़ दो या फिर प्रदूषण से बीमार होने को तैयार हो जाओ या दूसरा विकल्प है अपने बंद मुंह को खोलकर और फ्री का लोभ छोड़ कर अपने कर्तव्य को पूरा नहीं करने वालो को सबक सिखाओ।

परिवहन निगम के रिक्त पदों पर भर्ती जल्द, 73 एआरएम-1362 स्टेशन इंचार्ज समेत अन्य की नियुक्ति

एनटीवी संवाददाता

लखनऊ। सात साल के लंबे इंतजार के बाद परिवहन निगम के रिक्त पदों पर भर्ती करने की तैयारी है। सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक (एआरएम) के 73 पद खाली हैं, अभी फिल्हाल जैसे-तैसे काम चलाया जा रहा है। इन पदों पर चयन करने के लिए शासन की सहमति बन गई है। वहीं, स्टेशन इंचार्ज सहित 1362 अन्य पदों के लिए अनुमोदन मिलने का इंतजार है। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम में अधिकारियों के पदों को सीधी भर्ती और पदोन्नति से मिलने का नियम है। नियमित अधिकारियों व कर्मचारियों की सीधी भर्ती न होने से पदोन्नति भी प्रभावित है। निगम के लिए 1985, 1987 और 2015 में ही चयन किया गया है। इसके बाद से भर्ती शुरू होने की राह देखी जा रही है। चालक-परिचालकों के पद भी नियमित अंतराल पर खाली होते हैं लेकिन, वे संविदा पर भर लिए जाते हैं।

निगम में ग्रुप सी कैडर के 547 पदों में से 93 स्टेशन इंचार्ज, 128 असिस्टेंट स्टोर कीपर, 270 मैकेनिक और 56 इलेक्ट्रीशियन के पद खाली हैं। इन पदों को भरने का प्रस्ताव ग्रुप बी के साथ ही भेजा गया था लेकिन, शासन ने ग्रुप बी के 73 एआरएम के पदों को भरे जाने की सहमति दी है। वहीं, ग्रुप सी के प्रस्ताव पर जल्द मुहर लगने की उम्मीद है। अधिकारियों व कर्मचारियों की कमी का असर निगम के कामकाज पर पड़ रहा है। कार्यवाहकों से काम चलाया जा रहा है। चालक-परिचालकों की अनुकंपा नियुक्ति नहीं : निगम में 18 नियमित चालक व 797 परिचालकों सहित 815 का सेवावधि के दौरान निधन हो चुका है, उनकी जगह पर अनुकंपा आधार पर मृतक आश्रितों की नियुक्ति होनी है। इन पदों पर नियुक्ति के लिए शासन से निर्देश मिलने की राह देखी जा रही है। इसकी भी प्रक्रिया जल्द शुरू होने के संकेत हैं।

आम आदमी पार्टी संयोजक चाहते तो दिवाली पर दिल्ली में बैन नही होते बम पटाखे

एनटीवी संवाददाता

नई दिल्ली। पंजाब सरकार भी हरियाणा की तरह प्रयास करती तो इस वर्ष दिल्ली प्रदुषण की मार से मुक्त रहता। पंजाब सरकार और दिल्ली के मुख्यमंत्री यह चाहते ही नहीं थे की दिल्ली में प्रदुषण की मार ना पड़े इसलिए जो कार्य वह प्रदुषण को रोकने के लिए कर सकते थे उन्होने नही करे।पंजाब सरकार और आम आदमी पार्टी संयोजक चाहते तो पराली के प्रदुषण से दिल्ली बच सकती थी पर पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार और आम आदमी पार्टी के संयोजक तो समस्या के हल नहीं उसका इल्जाम दूसरो पर लगाने को ज्यादा महत्व देते है और उसके लिए विज्ञापनों में जनता का पैसा पानी की तरह खर्च करना।

हरियाणा सरकार ने इस वर्ष बेहतर पराली प्रबंधन और सुरक्षित पर्यावरण को लेकर कार्य किया। इसके लिए किसानों को 80 हजार सुपर सीडर जैसे कृषि उपकरण उपलब्ध करवाए । सुपर सीडर कृषि उपकरणों को बढावा देने के अलावा पराली का उद्योगों में उपयोग करने पर भी बल दिया। किसान खेतों में पराली को न जलाएं इसके लिए उन्हें एक हजार रुपए प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि भी दी।

राज्य में पराली जलाने की घटनाएं शून्य के बराबर रही और एनसीआर में प्रदूषण भी कम हुआ और किसान भी समृद्व एवं खुशहाल बना । हरियाणा सरकार ने इन सभी कार्यों के लिए फार्म मैकेनिजम के लिए उपलब्ध धन राशि को किसान हित मे प्रयोग किया ।अब दिल्ली की जनता स्वयं इन सबूतों के आधार पर फैसला करे की दिल्ली की सत्ता में विराजमान सरकार जब स्वयं नही चाहती की दिल्ली प्रदुषण मुक्त राज्य ग्रीन सिटी बने और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध हो।

दिल्ली सरकार हमें ये पैसा रोज के हिसाब से हर गाडी के हिसाब से दे.याफिर हमारी गाड़ियों को ना रोके : संजय सम्राट

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन टैक्सी बस वालों को बेरोजगार करने की साजिश के खिलाफ करेगी सीएम आवास पर प्रदर्शन

एनटीवी संवाददाता

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने दिल्ली सरकार की दमनकारी नीतियों और प्रदूषण की आड़ मैं टैक्सी बस वालो को बेरोजगार करने की साजिश के खिलाफ ट्रांसपोर्टर्स की मीटिंग हुई जिसमे फैसला लिया गया हैं की सोमवार दिनांक 7 नवम्बर 2022 को दिल्ली के मुख्य मंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल के निवास पर भारी प्रदर्शन किया जाएगा. और अपनी मांगो का ज्ञापन मुख्य मंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल और उपराज्यपाल श्री विनय सक्सेना जी को देंगे.

टैक्सी एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना हैं की आज फ़ोन पर दिल्ली परिवहन का मैसेज भी आ गया की 20 हजार का चालान होगा अगर कोई दिल्ली मैं डीजल की यूरो 4 टैक्सी या प्राइवेट कार चलाता हैं

संजय सम्राट ने बताया की आज हमारी यूरो 4 डीजल की टैक्सीयां और टेम्पो ट्रैवेलर - बसों को बॉर्डर पर रोका गया, इंद्रापुरम से आ रहे हमारे एक टेम्पो ट्रेवलर को वहाँ की पुलिस ने दिल्ली मैं नहीं घूसने दिया.संजय सम्राट का कहना हैं की यूरो 4 गाड़ियाँ दिल्ली सरकार ने ही पैसे लेकर रजिस्ट्रीड की थी. तब इन्होने कहा था की ये गाड़ियाँ पर्यावरण के लिए अनूकूल हैं. और इन सब गाड़ियों का प्रदूषण सर्टिफिकेट भी दिल्ली सरकार द्वारा दिया जाता हैं. दिल्ली की जनता अरबो रूपए इस प्रदूषण सर्टिफिकेट के लेने के लिए दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग को देती हैं. अगर प्रदूषण के नाम पर इन गाड़ियों को रोका जा रहा हैं तो फिर इस प्रदूषण सर्टिफिकेट का कोई मतलब नहीं हैं और इस प्रदूषण सर्टिफिकेट को बंद कर देना चाहिए.

इन गाड़ियों का हमने रोड टैक्स भी जमा करा. और अपनी खून पसीने की मेहनत से ये गाड़ियाँ खरीदी.दिल्ली सरकार प्रदूषण का नाम लेकर कही ना कही कार बनाने वाली कम्पनियो को फायदा देना चाहती हैं.आज इसलिए डीजल की यूरो 6 प्राइवेट कारो को और टैक्सीयों बसों को प्रदूषण के अनूकूल बता रही हैं.लेकिन सच्चाई ये हैं की यूरो 6 प्राइवेट कारो /टैक्सीयों की कीमत 2 लाख से 6 लाख ज्यादा हो गई हैं. और सबसे बड़ी बात ये हैं की दिल्ली परिवहन विभाग के इनफ़ोर्समेंट विभाग की गाड़ियाँ डीजल की यूरो 6 हैं और मजे की बात ये हैं की दिल्ली पुलिस की सिक्योरिटी और मंत्रियो की सिक्योरिटी मैं भी डीजल की यूरो 6 गाड़ियाँ चल रही हैं इसलिए बड़ी चालाकी से यूरो 6 डीजल गाड़ियों को इन्होने दिल्ली एनसीआर मैं चलने की इज्जाजत दी हैं.दूसरी बात ये हैं की दिल्ली सरकार इलेक्ट्रिक कारो को बढ़ावा देने के लिए ये सब कर रही हैं, ये गाड़ियाँ आम कारो और टैक्सी बसों से 200 % से 300 % ज्यादा महंगी हैं और इन गाड़ियों का रखरखाव बहुत महंगा हैं और ये इलेट्रिक गाड़ियाँ सिर्फ कार बनाने वाली कम्पनी के अधिकृत वर्कशॉप मैं ही रिपेयर होंगी जहा उनसे भारी पैसा वसूला जायेगा. जबकि इनकी बैटरी ख़राब होने पर मिट्टी मैं दबाने से आने वाले समय मैं प्रदूषण और ज्यादा बढ़ेगा.

संजय सम्राट का ये भी कहना हैं की कही ना कही दिल्ली की मंशा ओला उबेर और अन्य एप्प बैस्ड कम्पनीयो को फायदा देने की हैं क्योंकि इस वक़्त इन एप्प बेस्ड कपनीयों की चांदी हो रही हैं. क्योंकि मजबूरी मैं दिल्ली एनसीआर के लोग इन एप्प बेस्ड कम्पनियो की गाड़ियाँ किराये पर ले रहे हैं और इसका फायदा दिल्ली सरकार को कही ना कही होगा इसकी पूरी संभावना हैं.प्रदूषण की वजह दुसरे राज्यों मैं पराली जलाना हैं. जो प्रदूषण का मुख्य कारण हैं. या कंस्ट्रक्शन या फिर बड़ी फैक्ट्रीयों का धुआं. और कूड़े के ढेर जलाने से भी प्रदूषण सबसे ज्यादा बढ़ता हे.

और सबसे बड़ी सच्चाई ये हैं की मौसम जब सर्दी का आता हैं तो थोड़ा बदलाव तो मौसम मैं होता ही हे लेकिन दिल्ली सरकार इन बातो का फायदा उठाकर टैक्सी बस वालो को बेरोजगार करने पर तुली हैं संजय सम्राट का कहना हैं की दिल्ली सरकार हर किसी को मुआवजा या सब्सिडी देती हैं.हम भी दिल्ली सरकार का साथ देने को तैयार हैं. हम अपनी सारी गाडी पार्किंग मैं खड़ी कर देंगे या दिल्ली से बाहर भेज देंगे, लेकिन इसके लिए दिल्ली सरकार हम टैक्सी बस वालो को इसका मुआवाजा दे.

बस के 6000 एक दिन के

टेम्पो ट्रेवलर के 5000 एक दिन के

इन्नोवा किरस्टा के 4000 एक दिन के

स्विफ्ट दीजयर ईटिंओस के 3000 एक दिन के

दिल्ली सरकार हमें ये पैसा रोज के हिसाब से हर गाडी के हिसाब से दे.याफिर हमारी गाड़ियों को ना रोके सीधी सी बात हैं.

इसलिए सोमवार 7 नवम्बर 2022 को 11 बजे हम सब टैक्सी बस वाले मुख्य मंत्री केजरीवाल जी के घर पर भारी प्रदर्शन करके अपनी मांगो का ज्ञापन सौपीगे और अपना विरोध जताएँगे.इसमें काफी दूसरी यूनियन और टेम्पो एसोसिएशन भी हमारा साथ देंगी.ये लड़ाई हम दिल्ली की जनता के लिए लड़ रहे. क्योंकि दिल्ली की जनता के हक की लड़ाई लड़ने वाली कोई भी राजनैतिक पार्टी दिल्ली की जनता का साथ देने को तैयार नहीं हैं।

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण रजिस्टर्ड

कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट

कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

इनसाइड

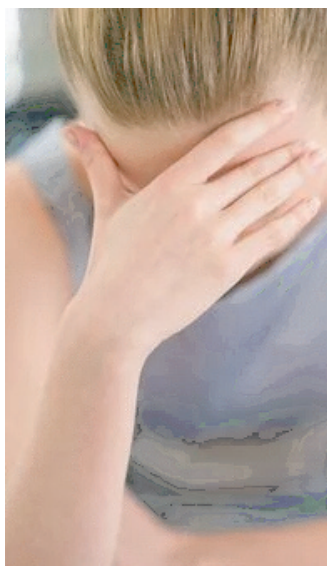

गृहणियों में बढ़ रहा है मेंटल स्ट्रेस, एक्सपर्ट्स ने बताया खुश रहने का तरीका

बाहर जा कर काम करने वाली महिलाओं के पास फिर भी बाहर जाकर अपनी बात कहने का या मूड बदलने का एक ऑप्शन होता है, लेकिन हाउसवाइफ के साथ ऐसा नहीं है. ऐसे में वो घर में ही गुस्से में, द्वंद्व में, झुंझलाहट में या चिंता में पड़ी रहती हैं.

पूरे घर को संभालने वाली (गृहणी/हाउसवाइफ) हमारी मां या पत्नी घर के हर एक सदस्य की जरूरत का ख्याल रखती हैं. उनका पूरा दिन घर की चार दीवारी में ही शुरू होता है और उसी में खत्म हो जाता है. सुबह से रात तक उनकी यही कोशिश रहती है कि किसी भी सदस्य को घर में कई तकलीफ न हो. ये सब वो किसके लिए करतीं हैं? अपने परिवार के लिए, परिवार की खुशियों के लिए. फिर जब कभी वो जरा गुस्सा हो जाती हैं, तो हम उन्हें गलत समझने लगते हैं. लेकिन क्या कभी सोचा है कि वो भी कितनी तरह के तनाव से जूझ रही है? उनकी मेंटल हेल्थ के बारे में कभी बात की है? ओनली माई हेल्थ की न्यूज रिपोर्ट के अनुसार, बाहर जा कर काम करने वाली महिलाओं के पास फिर भी बाहर जाकर अपनी बात कहने का या मूड बदलने का एक ऑप्शन होता है, लेकिन हाउसवाइफ के साथ ऐसा नहीं है. ऐसे में वो घर में ही गुस्से में, द्वंद्व में, झुंझलाहट में या चिंता में पड़ी रहती हैं. इस रिपोर्ट में क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट (Clinical Psychologist) डॉ. प्रज्ञा मलिका (Dr. Pragya Malika) का कहना है कि हाउसवाइफ में तनाव कई वजहों से होता है. ऐसी स्थिति में वे अकेले रहने लग जाती हैं. परिवार में जब कॉन्फ्लिक्ट्स (झगड़े और विवाद) बढ़ते हैं तो वे एडजस्टमेंट की ओर जाते हैं. जब ये मुद्दे हल नहीं हो पाते तो सुसाइड, तलाक या अन्य मेंटल डिसऑर्डर (Mental Disorder) में बदल जाते हैं. इसे ही दुष्चक्र या विशियस साइकल (Vicious Cycle) कहते हैं. डॉ. प्रज्ञा के मुताबिक हाउसवाइफ इन तरीकों को अपनाकर खुश रह सकती हैं.

अपनी हॉबीज को करें याद

डॉ प्रज्ञा का कहना है कि अक्सर महिलाएं घर के काम में उलझकर अपनी हॉबीज (शौक) को भूल जाती हैं. जब ये निराशा या कुंठा बढ़ने लग जाए, तो अपने हुनर को याद करें. वो काम जिसे आप पूरे मजे के साथ करते थे, वो दोबारा करें. खुद सोचें कि आपको क्या करने में अच्छा लगता है. ऐसा करने से आत्मविश्वास बढ़ेगा.

परेशानी का कारण ढूंढे

डॉ. प्रज्ञा के मुताबिक हाउसवाइफ को ये देखना पड़ेगा कि उन्हें परेशानी किस बात से हो रही है. जब परेशानी की वजह मालूम हो जाए, तब उस पर काम करें. उस परेशानी को मैनेज करें. दरअसल, महिलाओं की टेंशन की एक वजह ये भी है कि महिला और पुरुष का दिमाग थोड़ा अलग तरह से काम करता है. जैसे महिलाएं इमोशनल होकर सोचती हैं और पुरुष लॉजिस्टिक तरीके से सोचते हैं.

नए दोस्त बनाएं

हाउसवाइफ अपने स्ट्रेस को कम करने के लिए नए दोस्त बना सकती हैं. अपने घर के आसपास, रिश्तेदारों में या स्कूल-कॉलेज के दोस्तों के संपर्क में रहें और उनसे बात करते रहना भी कई बार इस स्ट्रेस से निकलने में मदद करता है.

अपने लिए टाइम निकालें

एक हाउसवाइफ होने के नाते आप क्या चाहती हैं? हाउसवाइफ होने के नाते आपके कुछ सपने होते हैं. तो यहां उन्हें सोचने की जरूरत है कि आप क्या चाहती हैं. खुद को खुश रखने के लिए अपना मी टाइम निकालें.

कुछ चीजों को हालात पर छोड़ दें

डॉ. प्रज्ञा का कहना है कि जिस सिचुएशन में आप कुछ कर नहीं सकतीं. जो हालात आपके बस से बाहर हैं, तो उन पर न सोचें.

आजादी और आध्यात्मिकता से जीवन हुआ आसान

महिलाओं में बढ़ा 'हैप्पीनेस लेवल'

स्टडी में सामने आया कि कम उम्र की युवतियां अपनी लाइफ से ज्यादा संतुष्ट हैं. (प्रतीकात्मक फोटो-pexels)स्टडी में सामने आया कि कम उम्र की युवतियां अपनी लाइफ से ज्यादा संतुष्ट हैं.

अब महिलाओं को मामूली बातों, जैसे क्या पहनना है, क्या खाना है, कैसे बैठना या उठना है, इसके लिए किसी की इजाजत लेने की जरूरत नहीं है. आजादी महिलाओं को खुशी दे रही है.

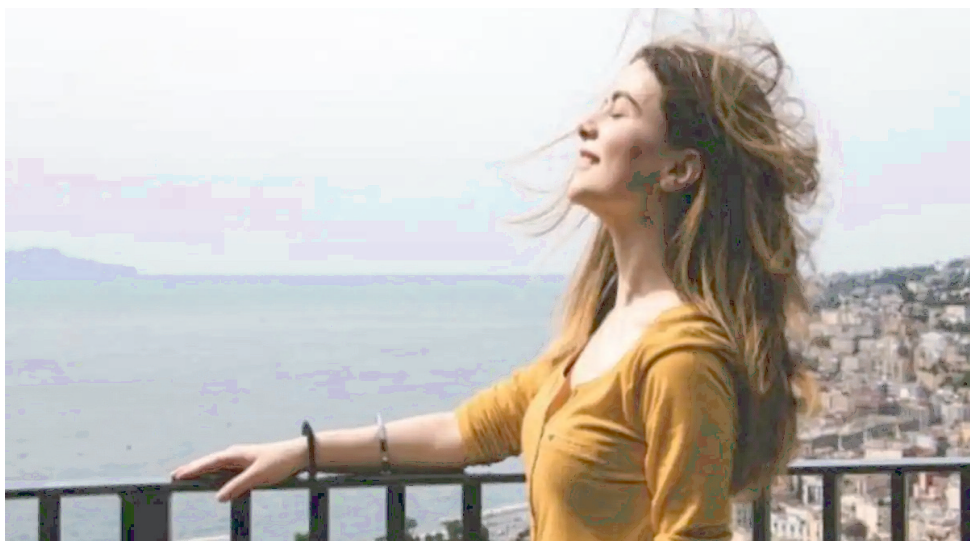

एक ताजा सर्वे में पता चला है कि कुछ दशक पहले की महिलाओं की तुलना में आज की युवतियां ज्यादा खुश रहने लगी हैं और ये बदलाव उनमें अपनी लाइफ से जुड़ा हर फैसला लेने की उनकी बड़ी हुई क्षमता की वजह से है. दैनिक भास्कर अखबार में छपी न्यूज रिपोर्ट के अनुसार अब उन्हें मामूली बातों, जैसे क्या पहनना है, क्या खाना है, कैसे बैठना या उठना है, इसके लिए किसी की इजाजत लेने की जरूरत नहीं है. वो अपने फैसले खुद ले सकती है. इसमें आध्यात्मिकता भी एक वजह है जो महिलाओं के 'लेवल ऑफ हैप्पीनेस (Level of Happiness)' को बढ़ा रही है.

इस रिपोर्ट के अनुसार, पुणे के रिसर्च सेंटर 'दृष्टि स्त्री अध्ययन प्रोबधन केंद्र (DSAPK)' ने देश के 29 राज्यों की 43 हजार से ज्यादा महिलाओं से उनकी खुशी को लेकर सवाल किए. इन महिलाओं की उम्र 18 साल से लेकर 70 साल के बीच की थी.

सर्वे में क्या निकला?

सर्वे में महिलाओं के साथ बातचीत में सामने आया कि कम उम्र की युवतियां अपनी लाइफ से ज्यादा संतुष्ट हैं. 18 से 40 साल के बीच की कम से कम 80 प्रतिशत प्रतिभागियों ने खुद को खुश बताया. इनमें से ज्यादातर महिलाएं आध्यात्म से भी जुड़ी हुई थीं, यानी पूजा-पाठ या किसी तरह का मेडिटेशन जैसी एक्टिविटी से वो जुड़ी हुई थीं.

आजादी महिलाओं को खुशी दे रही

आपको बता दें कि भारत के अलावा दूसरे देशों में भी महिलाओं में हैप्पीनेस के लेवल को समझने के लिए स्टडी हुई है. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया द्वारा की गई ऐसी ही एक स्टडी के लिए डे रिकंस्ट्रक्शन मेथड (Day Reconstruction Method) की मदद ली गई, जिससे ये समझने की कोशिश थी कि एक दिन में महिलाओं के इमोशंस में कितना उतार-चढ़ाव आता है. इसके नतीजों के अनुसार आजादी महिलाओं को खुशी दे रही है.

पुरुषों के मुकाबले बेटर हैंडलर

इस स्टडी में ये भी पाया गया कि फिट रहना भी महिलाओं को ज्यादा खुश रखता है. अध्ययन के मुताबिक एक्सरसाइज करना महिलाओं को उनकी सैलरी मिलने जैसी खुशी देता है. सर्वे में एक चौंकाने वाली बात ये भी सामने आई कि अगर महिला और पुरुष को एक जैसी परेशानी दी गई, तो महिला उसे ज्यादा आसानी से डील करती है.

महिलाओं को हो सकती है दिल की बीमारी

कार्डियो वेस्कुकर डिजीज यानी सीवीडी की रोकथाम के बारे में महिलाओं जागरूकता की कमी है. खानपान और लाइफस्टाइल सही नहीं होने से महिलाओं में इस बीमारी का खतरा बढ़ जाता है. औरतें जिस तनाव का अनुभव करती हैं, अक्सर उनपर आसपास के लोगों द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता है.

दिल की बीमारी के लक्षण महिलाओं (Women) में उतने स्पष्ट रूप से नहीं नजर आते हैं, जितने पुरुषों में आते हैं. इसका मतलब यह है कि अगर पुरुषों में को दिल की समस्या होती है, तो एनजाइना जैसे विशिष्ट लक्षण दिख सकते हैं. जिन्हें आसानी से देखा जा सकता है और सही इलाज और देखभाल शुरू हो सकती है. वहीं महिला में यह समस्या होती है कोई लक्षण नहीं हो दिखते हैं. फिर जब तक बीमारी (Illness) का पता चलता है, ये इतनी गंभीर हो जाती है कि हर तीन में से एक महिला की मौत हृदय रोग के कारण हो जाती है.

जागरूकता की कमी

कार्डियो वेस्कुकर डिजीज यानी सीवीडी की रोकथाम के बारे में महिलाओं जागरूकता की कमी है. खानपान और लाइफस्टाइल सही नहीं होने से महिलाओं में इस बीमारी का खतरा बढ़ जाता है. औरतें जिस तनाव का अनुभव करती हैं, अक्सर उनपर आसपास के लोगों द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता है. इस कारण भी महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा सीवीडी का खतरा बढ़ जाता है. तनाव के साथ, आहार की मात्रा और गुणवत्ता जैसे अन्य कारक भी प्रभाव डालते हैं. इसके अलावा जिन महिलाओं में पॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम पीसीओएस, प्रीक्लेम्पसिया, प्रेगनेंसी के दौरान हाई ब्लड प्रेशर और सुगर होती है. उनको हार्ट को लेकर सजग रहना चाहिए.

नियमित जांच

महिलाओं में हृदय स्वास्थ्य लिए नियमित रूप से जांच जरूर करानी चाहिए. कोई लक्षण स्पष्ट रूप से हो या नहीं यह महत्वपूर्ण है कि जोखिम का आकलन करने के लिए नियमित रूप से स्वास्थ्य जांच करवाएं. अगर सही समय पर बीमारी का पता चलता है तो महिलाओं में सीवीडी की बेहतर रोकथाम हो सकती है.

इन बातों का रखें ध्यान

जब हार्ट से जुड़ी बीमारी के बारे में पता करना मुश्किल हो, तो ऐसे में अपनी डाइट और लाइफस्टाइल को सही रखें महिलाएं अपने खाने में हृदय को स्वस्थ रखने वाली चीजों को शामिल करें जैसे फल सब्जियां, और जिन चीजों में फाइबर ज्यादा हो. उन्हें जरूर अपने आहार में शामिल करें तनाव से दूर रहें.

साफ सफाई से सुधर सकती है महिलाओं की मानसिक सेहत: रिसर्च

शोध में पाया गया है कि सफाई (**Cleanliness**) आपके मानसिक स्वास्थ्य पर कई सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है. अलमारियों पर जमी धूल, किचन को पोंछना या कमरे को व्यवस्थित करना मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद साबित हुए हैं. ये काम मानसिक स्वास्थ्य के लिए उतना ही फायदेमंद है, जितना मेडिटेशन या योग है. तो अगली बार जब तनाव हो तो घर की सफाई करने से मत कतराइयेगा.

तनाव से निपटने के कुछ लोग योग, माइंडफुलनेस या यहां तक कि स्पा में मालिश लेते हैं ताकि तनाव कम हो. वहीं एक वर्ग ऐसा भी है जो अलमारियों पर जमी धूल, किचन को पोंछना या कमरे को व्यवस्थित करते हैं. ये काम उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए उतना ही फायदेमंद है, जितना लोगों के लिए मेडिटेशन या योग है. तो अगली बार जब तनाव हो तो घर की सफाई करने से मत कतराइयेगा. कुछ लोगों को साफ-सुथरा और व्यवस्थित घर तनावमुक्त करने में मदद करता है. सफाई आपके मानसिक स्वास्थ्य कैसे असर करते है आइये जानते हैं.

अव्यवस्था अवसाद में योगदान कर सकती है

"व्यक्तित्व और सामाजिक मनोविज्ञान बुलेटिन" में प्रकाशित अध्ययन में पाया गया कि जिन महिलाओं ने अपने रहने की जगह को अव्यवस्थित रखा, उनमें तनाव अधिक पाया गया. शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि जिन महिलाओं का घर अस्त-व्यस्त रहता है, उनमें कोर्टिसोल का स्तर अधिक होता है. वहीं व्यवस्थित महिलाओं में तनाव कम मिला. इसलिए जरूरी है की घर को व्यवस्थित करना शुरू कर दें.

सफाई और सेहत

शोध में पाया गया है कि सफाई आपके मानसिक स्वास्थ्य पर कई सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है. यह मूड में सुधार के साथ-साथ उपलब्धि और संतुष्टि की भावना प्रदान करने के लिए भी है.ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से सफाई आपको तनावमुक्त करने में मदद कर सकती है. तो अपने घर या ऑफिस की डेस्क को साफ करके देखिये तनाव छू मंतर होगा. इसके साथ ही थोड़ी शारीरिक मेहनत भी हो जाएगी जो आपको फिट रखने में मदद करेगी.

इस बात का रखें ध्यान

सफाई करना अच्छी बात है मगर ये हद से ज्यादा नहीं होनी चाहिए. कई बार लोग सफाई में इतने ज्यादा आदी हो जातें हैं की दूसरों के घरों में भी डस्टिंग करने लगते हैं. ऐसी अवस्था से बचें.

अपनी बेटियों को करें प्रोत्साहित आत्मविश्वास भरना बेहद आवश्यक

आप आप एक बेटी के माता-पिता हैं तो ये बिलकुल भी ना सोचें कि वो एक बेटी होने के नाते जीवनभर संघर्ष करेगी। आप उसकी किसी ताकत या कमजोरी की धारणा बिलकुल ना बनाएं। उसकी खूबियों को प्रोत्साहित करने के साथ उसकी कमजोरियों को भी समय पर पहचानें और उसे सुधारने की कोशिश करें।

कहते हैं कि बेटियां अपने माता-पिता के लिए बेहद ख़ास होती हैं। जितनी वो खास होती हैं उतनी ही ख़ास उनकी देखभाल भी होती है। जैसे-जैसे बेटियां बड़ी होती जाती हैं, वैसे-वैसे उनके प्रति माता-पिता की जिम्मेदारी भी बढ़ती जाती है। बात अगर पुराने जमाने की करें तो पहले घर-परिवार में बेटियों के पैदा होने पर उन्हें शगुन और साक्षात देवी लक्ष्मी का रूप माना जाता था। लेकिन आज के समय में भी बेटियां अपने आत्मविश्वास से ऊंचे से ऊंचा आसमान छूने की प्रतिभा रखती हैं। आज के समय में उनका दर्जा लड़कों से कम नहीं है। ये सब कुछ उनके माता-पिता की परवरिश का नतीजा होता है, जिससे उनका सिर गर्व से ऊपर उठता है। बहुत से माता-पिता होते हैं जो अपने बच्चों की तरक्की देखना चाहते हैं। वो चाहते हैं कि उनकी बेटी हर दिशा में आगे बढ़े, चाहे वो कोई भी काम क्यों ना हो। यदि आप के घर में भी बेटी है तो आज का ये लेख खास आपके लिए है, जिसके जरिये हम आपको बताएंगे कि कैसे आप उसकी सही तरीके से परवरिश करें जिससे वो आत्मविश्वास से भरी रहे। तो चलिए फिर शुरू करते हैं।

1. बेटी को करें प्रोत्साहित–जब बेटी बड़ी होती है, तो उसकी जरूरतें भी अल्फ होती चली जाती हैं। आप उसे जमीन से जुड़े रहना सिखाएं। अगर वो आगे बढ़ाने के लिए अपने भविष्य को लेकर कुछ चुनाव करती है तो उसे हताश ना करें। उसका साथ दें। एक बच्चे के लिए उसके माता-पिता का साथ बेहद जरूरी होता है। आप उसे प्रोत्साहित करें। ताकि उसके अंदर का आत्मविश्वास कम ना हो।

2. बेटी की करें तारीफ– आप अपनी बेटी को बताएं की वो दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की है। उसके अंदर कोई भी कमी नहीं है। उकसे अंदर ऐसी बात है जो उसे बाकियों से जुदा बनाती है। इससे बिटिया का आत्मविश्वास और भी बढ़ेगा।

3. सीखने का दें अवसर–अगर बेटी को संगीत या किसी भी तरह की एक्टिविटी में इन्ट्रेस्ट हैं लेकिन वो इन में फिट नहीं बैठते। ऐसे में अगर आप उसका साथ नहीं देंगे तो उसका मनोबल टूटता चला जाएगा। उसे सीखने का अवसर जरुर दें। उसे अपनी असल प्रतिभा धीरे-धीरे खुद समझ आएगी और वो आगे बढ़ेगी।

4. बेटी को सिखाएं समाजिकता–बेटी को समाज और उससे जुड़ी बातों के बारे में सिखाएं। उसे सिखाएं कि अगर उससे कोई दोस्ती नहीं करता तो उसका क्या कारण हो सकता है। समाज के प्रति उसके अंदर नकारात्मकता ना भरें। वरना एक समय के बाद वो समाज को नकारात्मक नजरिये से देखने लगेगी। उसे सभी पहलुओं के बारे में जरुर सिखाएं।

5. बढ़ाएं बेटी की क्षमता–अगर आपकी बेटी अपना होमवर्क कर रही है तो यूं ही उसकी मदद ना करें। वो जब तक आपसे मदद नहीं मांगती तब तक उसकी मदद मत करें। उसे उसकी क्षमता के अनुसार काम करने दें। उसे अपने दम में हमेशा आगे बढ़ने के लिए ही प्रोत्साहित करें।

6.ना थोपें अपनी मर्जी– आज के समय में बेटियां स्पोर्ट्स को ज्यादा पसंद कर रही हैं, और उसी में अपना भविष्य भी तय कर रही हैं। अगर वो एक जिमनास्टिक बनना चाहती है या फुटबॉल खेलना चाहती है तो उसे आगे बढ़ने दें, ना की अपना फैसला या अपनी चाह उसपर थोपें। आप ये जरुर पता लगा सकते हैं, कि वो किस खेल को खेलने के लिए ज्यादा सक्षम है। आप खुद उसके लिए कोई खेल तय ना करें।

7. मत बनाइए कमजोर–आप आप एक बेटी के माता-पिता हैं तो ये बिलकुल भी ना सोचें कि वो एक बेटी होने के नाते जीवनभर संघर्ष करेगी। आप उसकी किसी ताकत या कमजोरी की धारणा बिलकुल ना बनाएं। उसकी खूबियों को प्रोत्साहित करने के साथ उसकी कमजोरियों को भी समय पर पहचानें और उसे सुधारने की कोशिश करें।

8. सेक्सिज्म के लिए करें तैयार–बहुत लोगों की सोच है कि बेटियां वो काम नहीं कर सकती जो बेटे कर सकते हैं। अगर आप अपनी बेटी को वो टीवी शो या फ़िल्में देखते हुए नोटिस करते हैं जो पूरी गर्ल्स पर आधारित होती है तो उसे समझिये और उसे सेक्सिज्म के लिए तैयार करें।

9. बेटी को दिखाएं रोल मॉडल–अक्सर ऐसा होता है जब भी आप कोई न्यूज़ देखते या पढ़ते हैं तो उसमें आपको कई महिलाएं सीनेटरी, खिलाड़ी, चिकित्सक या एथलीट दिखेंगी। ये अच्छा तरीका होता है अपनी बेटी को इन महिलाओं के बारे में दिखाना और समझाना। आप इम्नें से कोई भी अपनी बेटी के लिए रोल मॉडल चुनने में उसकी मदद कर सकते हैं।

तो ये कुछ ऐसी खास टिप्स हैं, जिनकी मदद से आप अपनी बिटिया को अच्छी परवरिश देने के साथ उसमें आत्मविश्वास भर सकते हैं। अगर आपकी भी बेटी है तो आप हमारी बताई हुई टिप्स को जरुर आजमाएं। आपको इससे बेहतर परिणाम मिलेगा।

इनसाइड

दिल्ली-एनसीआर के 5 में से चार परिवार प्रदूषण से बीमार, सांस लेने-आंखों में जलन सहित झेल रहे ये परेशानियां

दिल्ली-एनसीआर के इलाकों में बीते दिनों से वायु प्रदूषण स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है। लोकलसर्किल नामक कम्युनिटी इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म की तरफ से किए गए सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि दिल्ली-एनसीआर के पांच में से चार परिवार प्रदूषण की वजह से बीमार है।

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर के इलाकों में बीते दिनों से वायु प्रदूषण स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है। लोकलसर्किल नामक कम्युनिटी इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म की तरफ से किए गए सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि दिल्ली-एनसीआर के पांच में से चार परिवार प्रदूषण की वजह से बीमार है। लोकलसर्किल ने दिल्ली, गाजियाबाद, नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम के 19000 से अधिक लोगों को सर्वे में शामिल किया है। इनमें 63 प्रतिशत पुरुष और 37 प्रतिशत महिलाएं शामिल की गई हैं। एलएनजेपी अस्पताल के एमडी डॉ सुरेश कुमार ने बताया कि प्रदूषण बढ़ने से अस्थमा, सांस लेने में तकलीफ और ब्लड प्रेशर के मरीजों की संख्या में इजाफा हुआ है। बढ़ी हुई पीएम 2.5 उपस्थिति के साथ प्रदूषित हवा प्रभावित लोगों में सांस लेने की समस्याओं को बढ़ा देती है। 10-15 लोग और 2-3 बच्चे हर दिन अस्पताल आ रहे हैं।

80 प्रतिशत लोग प्रदूषण के कारण कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

13 प्रतिशत लोग प्रदूषण के दौरान दिल्ली-एनसीआर से बाहर गए।

07 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उन्हें प्रदूषण से कोई समस्या नहीं

नोट : सर्वे में 10121 लोग शामिल हुए।

इतने प्रतिशत लोग इन-इन समस्याओं का रहे सामना...

69 प्रतिशत लोग गले से संबंधित बीमारी से हैं प्रेरशान।

50 प्रतिशत लोग नाक बहना संबंधित बीमारी से ग्रस्त।

56 प्रतिशत लोग आंखों में जलन से पीड़ित।

44 प्रतिशत लोग सांस लेने संबंधी बीमारी से ग्रस्त।

44 प्रतिशत लोग सिर दर्द से पीड़ित।

31 प्रतिशत लोग ध्यान केंद्रित नहीं कर पाने से पीड़ित।

44 प्रतिशत लोग प्रदूषण के कारण ठीक तरह से नींद नहीं ले पा रहे।

नोट : सर्वे में 8097 लोग शामिल हुए।

डाक्टर से सलाह ले रहे इतने लोग...

12 प्रतिशत लोग एक या दो बार डाक्टर के पास जा चुके हैं।

6 प्रतिशत लोग एक या दो बार अस्पताल पहले से जा चुके हैं।

22 प्रतिशत लोगों ने अपने डाक्टर से प्रदूषण से संबंधित बीमारी को लेकर सलाह लिया है।

6 प्रतिशत लोग आगामी दिनों में प्रदूषण से संबंधित बीमारी को लेकर डाक्टर के पास जाने की योजना बना रहे।

24 प्रतिशत लोग घर में बिना डाक्टर की सलाह पर खुद प्रदूषण से संबंधित बीमारी से निपटने की बात कही।

24 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उन्हें प्रदूषण से संबंधित कोई बीमारी नहीं है।

6 प्रतिशत लोग दिल्ली-एनसीआर से बाहर गए।

ट्रैफिक पुलिस की एडवायजरी, हरियाणा-UP समेत अन्य राज्यों के ट्रकों की दिल्ली में नो एंट्री

बरती जाएगी सख्ती, नहीं मिलेगा किसी भी ट्रक को प्रवेश

दिल्ली में प्रवेश कर करने वाले 20 बड़े नाकों पर परिवहन विभाग और यातायात पुलिस की संयुक्त टीमें मौजूद रहेंगी। इसके अलावा अन्य 109 छोटे नाकों पर भी टीमें औचक निरीक्षण करेंगी। इस बैठक के बाद दक्षिणी दिल्ली में बड़े नाके में शुमार रजोकरी प्वाइंट पर परिवहन विभाग और दिल्ली यातायात पुलिस की संयुक्त टीम तैनात कर दी गई।

एनटीवी संवाददाता

वायु प्रदूषण के चलते दूसरे राज्यों के डीजल ट्रकों को रोकने के लिए दिल्ली परिवहन विभाग ने कमर कस ली है। राजधानी दिल्ली में प्रवेश करने वाले सभी छोटे-बड़े नाकों पर टीमें तैनात है। प्रतिबंध के बावजूद गैर जरूरी सेवा के अलावा वाले डीजल ट्रक पर कार्रवाई की जाएगी।

नई दिल्ली। मामूली राहत के बीच दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण बहुत खराब श्रेणी में ही बना हुआ है। दिल्ली के साथ-साथ एनसीआर के शहरों में भी वायु गुणवत्ता सूचकांक 400 से नीचे हैं, लेकिन यह भी स्वास्थ्य के लिहाज से कहीं से अच्छा नहीं है।

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने भी जारी की एडवायजरी

दिल्ली में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान लागू होने के बाद ट्रकों के प्रवेश पर रोक लग गई है, हालांकि जरूरी सेवाओं वाले ट्रकों के प्रवेश पर छूट है। इस बीच दिल्ली यातायाता पुलिस ने एडवायजरी भी जारी की है। इसके तहत गैर-जरूरी ट्रकों का प्रवेश, नोएडा के रास्ते दिल्ली में गैर-बीएस VI डीजल से चलने वाले हल्के वाहनों की आवाजाही पर प्रतिबंध है।

नियम तोड़ने पर 20,000 रुपये लगेगा चालान

वहीं, दिल्ली में जरूरी सेवाओं के अतिरिक्त डीजल ट्रकों को शहर में प्रवेश न होने देने के लिए दिल्ली परिवहन विभाग ने कमर कस ली है। शनिवार को इसे लेकर परिवहन आयुक्त आशीष कुंद्रा ने सभी प्रमुख एजेसियों की बैठक ली और आगे की रणनीति पर चर्चा की गई। बता दें कि ट्रकों पर प्रवेश करने पर 20,000 रुपये का चालान का प्रविधान है।

109 छोटे नाकों पर तैनात की गई टीमें

इसमें तय हुआ है कि दिल्ली में प्रवेश कर करने वाले 20 बड़े नाकों पर परिवहन विभाग और यातायात पुलिस की संयुक्त टीमें मौजूद रहेंगी। इसके अलावा अन्य 109 छोटे नाकों पर भी टीमें औचक निरीक्षण करेंगी। इस बैठक के बाद दक्षिणी दिल्ली में बड़े नाके में शुमार रजोकरी प्वाइंट पर परिवहन विभाग और दिल्ली यातायात पुलिस की संयुक्त टीम तैनात कर दी गई।

बरती जाएगी सख्ती, नहीं मिलेगा किसी भी ट्रक को प्रवेश

इसके साथ परिवहन आयुक्त कुंद्रा ने नगर निगम से भी बात की है और यह तय हुआ है कि जरूरी सेवाओं के अलावा डीजल के किसी भी ट्रक को नहीं आने दिया जाएगा। इन ट्रकों को टोल टैक्स प्वाइंट से ही वापस भेज दिया जाएगा। इसके लिए निगम टोल की पर्ची नहीं काटेगा। कुंद्रा ने कहा है कि वैसे तो दूसरे राज्यों से अनुरोध किया गया है कि वे डीजल के ट्रकों को दिल्ली नहीं आने दें। अब अगर ऐसे में कोई ट्रक आ भी जाता है तो उस पर कार्रवाई की जाएगी। इसके साथ ही परिवहन आयुक्त ने यह भी साफ किया है कि दिल्ली में पेट्रोल के एक अप्रैल 2010 से पहले के पंजीकृत और डीजल के एक अप्रैल 2020 से पहले के केवल चार पहिया वाहन प्रतिबंधित हैं, दो पहिया पर किसी तरह का प्रतिबंध नहीं है। उन्होंने बताया कि शनिवार को दिल्ली भर में विभाग की 120 टीमें तैनात रही हैं। यह सिलसिला अगले आदेश तक जारी रहेगा।

जहरीली हवा से गैस चैंबर बनी दिल्ली! BJP नेताओं ने प्रदूषण को लेकर 11 मूर्ति पर किया प्रदर्शन

एनटीवी संवाददाता

दिल्ली में दिवाली के बाद से ही इस बार फिर वायु प्रदूषण बढ़ गया है। हालात ऐसे हो चुके हैं कि लोगों को सांस लेने और आंखों में जलन की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में हवा की गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में बनी हुई है। सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च (SAFAR) के अनुसार, आज यानी रविवार सुबह दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 339 (बहुत खराब) श्रेणी में रिकॉर्ड किया गया। वहीं दिल्ली से सटे गुरुग्राम में एक्यूआई 304 (बहुत खराब) और नोएडा में 349 (बहुत खराब) दर्ज हुआ है।

यातायात पुलिस ने जारी की एडवाइजरी।

राजधानी में वायु प्रदूषण (Delhi Air Pollution) को लेकर लगातार दिल्ली की आम आदमी पार्टी (Aam Aadmi Party) सरकार पर विपक्षी पार्टियां हमला बोल रही हैं। इसी कड़ी में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता तेजिंदर पाल सिंह बग्गा ने रविवार को अन्य नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ दिल्ली स्थित 11 मूर्ति पर प्रदर्शन कर आम आदमी पार्टी पर निशाना साधा है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने राजधानी को गैस चैंबर में तब्दील कर दिया है। इसे लेकर उन्होंने दिल्ली के लोगों से आगामी नगर निगम चुनाव में आम आदमी पार्टी को वोट नहीं देने की अपील की है।

उल्लेखनीय है कि 4 नवबंर को दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के चुनाव की घोषणा हो गई। एकीकृत नगर निगम के चुनाव चार दिसंबर और मतगणना सात दिसंबर को होगी।

अगले दो से तीन दिनों तक रहेगी स्मॉग की चादर

मौसम विज्ञानी महेश पलावत के अनुसार, अभी अगले दो से तीन दिनों तक स्मॉग की चादर बने रहने की संभावना है। प्रदूषण का स्तर घटने की वजह पूर्वी हवा है। इसलिए पराली का धुआं दिल्ली की तरफ बहुत ही कम आ रहा है।

हवा की दिशा ने पराली के धुएं को घुमाया

बता दें कि हवा की दिशा बदलने और रफ्तार बढ़ने पर शनिवार को वायु प्रदूषण का मीटर थोड़ा नीचे आया। दिल्ली-एनसीआर में सभी जगह का एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआइ) 400 से नीचे दर्ज किया गया। एक्यूआइ की श्रेणी भी गंभीर से बहुत खराब श्रेणी में आ गई। इसी के मद्देनजर वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) की रविवार को फिर से समीक्षा बैठक होगी।

पाबंदियों में मिल सकती है कुछ छूट

उम्मीद जताई जा रही है कि इस बैठक में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के चौथे चरण की पाबंदियों में कुछ छूट मिल सकती है। खासतौर पर निजी वाहनों को चलाने की अनुमति दी जा सकती है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की ओर से जारी एयर क्वालिटी बुलेटिन के मुताबिक शनिवार को दिल्ली का एयर इंडेक्स 381 रहा।

शुक्रवार को यह 447 था। दिल्ली के कुछ इलाकों में एक्यूआइ शनिवार को भी 400 से अधिक बना रहा। आरके पुरम में एक्यूआइ का स्तर 407, सोनिया विहार में 409, जहांगीरपुरी में 409, रोहिणी में 403, नरेला में 414, वजीरपुर में 401, बवाना में 412 रहा। पीएम 2.5 का स्तर 202 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर और पीएम 10 का स्तर 321 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर रहा।

12 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चली हवा

शनिवार को दिल्ली में हवा 10 से 12 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चली। इसी के चलते प्रदूषण से लोगों को राहत मिली है। शनिवार को उत्तर-पश्चिम की जगह पूर्वी और दक्षिण पूर्वी दिशा से हवा चली, जिसके चलते पराली का प्रदूषण दिल्ली तक अपेक्षाकृत कम पहुंचा।

दिल्ली-एनसीआर के AQI में मामूली सुधार, जहरीली हवा का कहर बरकरार; जानें आज का हाल

एनटीवी संवाददाता

दिल्ली-एनसीआर के लोगों का प्रदूषण से हाल बेहाल है। लोग जहरीली हवा में सांस ले रहे हैं। बच्चों के स्कूल बंद है। इस बीच रविवार को AQI में मामूली सुधार देखने को मिला। हालांकि प्रदूषण का स्तर अब भी बेहद खराब है।

नई दिल्ली। बीते हफ्ते दिल्ली-एनसीआर में गंभीर स्तर के प्रदूषण के बाद रविवार को हवा की गुणवत्ता में मामूली सुधार देखने को मिला। रविवार यानि आज सुबह के आंकड़ें बताते हैं कि दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) 339 रहा। वहीं, नोएडा में 349 और गुरुग्राम में 304 AQI रहा। हालांकि, वायु में प्रदूषण के इस स्तर को भी बेहद खराब माना जाता है।

सफर की भविष्यवाणी हुई सच

प्रदूषण को लेकर वायु गुणवत्ता और मौसम पूर्वानुमान और अनुसंधान की प्रणाली (SAFAR) की भविष्यवाणी सच साबित हुई। हवा की अनुकूल गति और पराली जलाने की घटनाओं में गिरावट के कारण शनिवार की तुलना में दिल्ली-एनसीआर की हवा आज थोड़ी साफ हुई। 5 अक्टूबर को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 431 दर्ज किया गया, जो हवा की गुणवत्ता की 'गंभीर' श्रेणी है। नोएडा (यूपी) का एक्यूआई 'गंभीर' श्रेणी में 529 और धीरपुर (दिल्ली) के पास 'गंभीर' श्रेणी में 534 दर्ज किया गया।

गुरुग्राम में जहरीली हवा से थोड़ी राहत

रविवार को सुबह सात बजे गुरुग्राम में वायु प्रदूषण पीएम 2.5 का स्तर 327 दर्ज किया गया। हल्की हवा चलने से पीएम 2.5 का स्तर कम हुया है। शुक्रवार को पीएम 2.5 का स्तर 458 पहुंच गया था। शनिवार को पीएम 2.5 का स्तर 371 दर्ज हुया था।

दिल्ली-नोएडा में स्कूल बंद

दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण के खतरनाक होते असर के चलते ग्रेप का चौथा चरण लागू है। राजधानी दिल्ली में कई प्रतिबंध लगा दिए गए हैं। दिल्ली सरकार के कार्यालय 50 प्रतिशत क्षमता से खुलेंगे और 50 प्रतिशत कर्मचारी वर्क फ्राम होम करेंगे। इसके अलावा पांच से आठ नवंबर तक प्राइमरी कक्षा वाले सभी स्कूलों को बंद रखने का फैसला लिया गया है। साथ ही पांचवीं से ऊपर की कक्षाओं की आउटडोर एक्टिविटी बंद रहेंगी। नोएडा में भी क्लास एक से आठवीं तक के छात्रों का स्कूल आना मना है। सभी के क्लासेस आनलाइन चल रही हैं।

गैर जरूरी सामान वाले ट्रकों के लिए नो एंट्री

ग्रेप के चौथे चरण को तीन नवंबर से तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। दिल्ली के अधिकारियों से कहा गया है कि गैर जरूरी वस्तुएं ले जाने वाले ट्रकों को अगले आदेश तक दिल्ली में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाए।

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने शनिवार को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल पत्र लिखकर अपील की है कि गैर जरूरी सामान ले जाने वाले ट्रकों को पेरिफेरल एक्सप्रेस-वे पर भेजने के लिए उपाय करें ताकि राष्ट्रीय राजधानी की सीमाओं पर यातायात जाम से बचा जा सके।

मतदान वाले दिन 4 दिसंबर को दिल्ली में हैं 35 हजार से अधिक शादियां

कई बड़े नेताओं के घर भी इन तिथियों में विवाह उत्सव, काकटेल पार्टी के लिए नई तिथि तय कर रहे लोग

एनटीवी संवाददाता

मतदान के साथ शादियों के आयोजन प्रभावित होने की आशंका जताई जा रही है। इस मामले को लेकर राज्य चुनाव आयोग से पक्ष मांगा गया लेकिन वहां से प्रतिक्रिया उपलब्ध नहीं हो सकी। यही हाल मतगणना के दिन 7 दिसंबर का भी है।

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) चुनाव की घोषणा के साथ उन लोगों की चिंता बढ़ गई है, जिनके घर शादियां हैं। मतदान के दिन चार दिसंबर को ही अकेले दिल्ली में 35 हजार शादियां हैं। यही हाल मतगणना के दिन सात दिसंबर का भी है। उस दिन भी 20 हजार शादियों का अनुमान है। इसे लेकर तैयारियां तेज हैं।

कई बड़े नेताओं के घर भी इन तिथियों में विवाह उत्सव

बैंक्वेट हाल से लेकर घोड़े, बैंडबाजा व पंडित समेत अन्य की बुकिंग हो गई है। विवाह लग्न के बीच चुनाव आ जाने से सवाल यह उठ रहा है कि दिल्ली के मतदाता शादियों की तैयारियों में जुटेंगे कि वोट देने जाएंगे। दिलचस्प यह है कि दिल्ली के कई बड़े नेताओं के घर भी इन दो तिथियों में विवाह उत्सव है।

राजनीतिक दलों को कम मतदान की आशंका सताने लगी है। यही वजह है कि नेताओं द्वारा मतदान के लिए प्रेरित करने के लिए विशेष अभियान चलाने की बात कही जा रही है। दूसरे, शादी के आयोजन में आयोजकों द्वारा काकटेल पार्टी का दिन बदला जाने लगा है, क्योंकि मतदान के दो दिन पहले शाम से ही राष्ट्रीय राजधानी में शराब की बिक्री व वितरण प्रतिबंधित हो जाता है, जो मतदान वाले दिन शाम तक जारी रहता है।

काकटेल पार्टी के लिए नई तिथि तय कर रहे लोग

कम्युनिटी वेलफेयर बैंक्वेट हाल एसोसिएशन के अध्यक्ष रमेश डांग के मुताबिक, चार दिसंबर को दिल्ली में 35 हजार से अधिक शादियां हैं। अब लोग काकटेल पार्टी के लिए नई तिथि तय कर

रहे हैं, क्योंकि शादियों की तिथि को तो नहीं बदला जा सकता है। इसके लिए नए सिरे से सहूलियत के अनुसार तिथियां तय की जा रही हैं। इस मामले पर राज्य चुनाव आयोग से पक्ष मांगा गया, लेकिन वहां से प्रतिक्रिया उपलब्ध नहीं हो सकी।

दिल्ली भाजपा प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर कहते हैं कि देवोत्थान एकादशी के साथ ही शादियों का मौसम शुरू हो जाता है, जो दिसंबर के मध्य तक चलता है। अब जबकि चुनाव की तिथि घोषित हो चुकी है तो ऐसे में हम मतदाताओं से पहले मतदान, फिर पकवान'' की अपील करेंगे। इसके लिए जागरूकता अभियान चलाएंगे।

बदली जाए चुनाव तिथि

चांदनी चौक स्थित श्रीसत्यनारायण मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित रमेश चंद्र शर्मा के अनुसार दिसंबर माह में चार, आठ, नौ, 12 व 14 को दिल्ली में जबरदस्त शादियां हैं। इससे निश्चित ही चुनाव के साथ शादियां भी प्रभावित होंगी। ऐसे में अच्छा यही रहेगा कि चुनाव की तिथियों में बदलाव कर इसे 15 दिसंबर के बाद रखा जाए।

मूलभूत सुविधाओं की मांग को लेकर सोसाइटी के लोगों ने किया प्रदर्शन

ग्रेटर नोएडा वेस्ट की एलिगेंट विले सोसायटी में मूलभूत सुविधाओं को लेकर को लेकर सोसायटी के लोगों ने प्रदर्शन किया। सोसायटी के लोगों का आरोप है कि सोसायटी में बिजलीपानी लिफ्ट जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है जिससे आक्रोशित होकर बिल्डर के खिलाफ धरना दिया।

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट की एलिगेंट विले सोसायटी में मूलभूत सुविधाओं को लेकर को लेकर सोसायटी के लोगों ने प्रदर्शन किया। सोसायटी के लोगों का आरोप है कि सोसायटी में बिजली,पानी , लिफ्ट जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। सोसायटी में कई बार लिफ्ट खराब हो चुकी है, जिससे आक्रोशित होकर बिल्डर के खिलाफ धरना दिया।

सोसायटी के लोगों ने बताया कि बिल्डर ने आधे अधूरे फ्लैट पर कब्जा दे दिया। अब बायर्स मूलभूत सुविधाओं के बिना रहने को मजबूर हैं। कभी पानी नही आता, कभी बिजली के तारों में आग लग जाती है। तो कभी लिफ्ट खराब हो जाती है। हर टावर में एक ही लिफ्ट लगी है। लिफ्ट खराब हो जाने के बाद लोगों के सहारे आना जाना पड़ता है। इलेक्ट्रिक शाफ़्ट पूरी तरह से खुले पड़े है और तार अव्यवस्थित तरीके से जुड़े हैं जिसमें रोज आग लगने का डर बना रहता है। सोसायटी में फायर सेफ्टी का कोई इंतजाम नही है। कई बार भीषण आग की घटना भी हो चुकी है पर बिल्डर ने कुछ भी नही किया।

250 परिवार अपनी जीवन भर की जमा पूंजी देकर भी अपनी जान जोखिम में डालकर रह रहे हैं । कई बार ग्रेटर नोएडा विकास प्राधिकरण से सोसाइटी का सुरक्षा ऑडिट कराए जाने की मांग की जा चुकी है। लेकिन अधिकारी कई बार शिकायत की पत्र सौंपने के बावजूद भी गंभीर नहीं है। सोसायटी के लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही व्यवस्था नहीं सुधरी तो उग्र आंदोलन किया जाएगा।

उधर, ग्रेटर नोएडा वेस्ट की पंचशील ग्रींस टू सोसायटी में रखरखाव प्रबंधन द्वारा 30 से अधिक पेड़ काटे जाने का मामला सामने आया है। सोसायटी के लोगों ने मामले की शिकायत पुलिस व वन विभाग की टीम से की। सूचना पर पहुंची पुलिस व वन विभाग की टीम ने मुकदमा दर्ज कर रखरखाव प्रबंधन टीम के तीन कर्मचारियों को हिरासत में ले लिया। हालांकि निजी मुचलके व एक लाख रुपये जुर्माना लगाए जाने के बाद तीनों आरोपितों को छोड़ दिया गया है।

तेज हवा ने नोएडा के वातावरण को किया साफ, धुंध की चादर हटने से विजिबिलिटी बढ़ी

एनटीवी न्यूज

नोएडा में रविवार सुबह हवा की रफ्तार तेज रहने से वायु प्रदूषण की स्थिति में सुधार देखने को मिला है। प्रदूषण के कारण धुंध की मोटी चादर छटने से लोगों को राहत मिली है। न्यूनतम दृश्यता भी अधिक दर्ज की जा रही है।

नोएडा। दिल्ली-एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के चौथा चरण लागू होने के बाद एक्यूआइ में सुधार देखने को मिल रहा है। रविवार सुबह तेज हवा की रफ्तार से वायु प्रदूषण की स्थिति में सुधार देखने को मिल रहा है। वायु प्रदूषण से बनी धुंध की चादर छटने से राहत मिली है। न्यूनतम दृश्यता (Minimum Visibility Rate) भी अधिक दर्ज की जा रही है। तेज धूप के कारण आसमान साफ नजर आ रहा है। हालांकि एक्यूआइ अभी भी बहुत खराब श्रेणी में है। रविवार को नोएडा में सुबह दस बजे 341 दर्ज किया गया, जो सांस रोगियों के लिए नुकसानदायक है।

ग्रेप के चलते लगे कई प्रतिबंध

कारगर क्रियान्वयन के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने कठोर कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। इसमें सीएक्यूएम के वैधानिक निर्देशों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ भारी दंड भी शामिल है। ग्रेप के पहले, दूसरे एवं तीसरे चरण के क्रियान्वयन की स्थिति का जायजा लेने के लिए ही सीएक्यूएम ने बुधवार को हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के एनसीआर जिलों की एजेंसियों/निकायों के साथ एक समीक्षा बैठक की थी।

बिल्डर पर 5 लाख का जुर्माना

इस बैठक में नोएडा प्राधिकरण द्वारा सेक्टर-151 स्थित एक निर्माण प्रोजेक्ट की फोटो दिखाई थी, जिसमें बिल्डिंग को ग्रीन नेट से नहीं ढका गया था। आयोग ने इसको लेकर अधिकारियों को फटकार लगाई थी। साथ ही यूपीपीसीबी के अफसरों को जुर्माना लगाने के लिए निर्देशित किया था। नोएडा प्राधिकरण ने प्रोजेक्ट का निर्माण कर रहे बिल्डर पर पांच लाख का जुर्माना लगाया है।

प्रदूषण के स्तर में मामूली सुधार

प्रदूषण की रोकथाम को लेकर लागू ग्रेप के चौथे चरण की पाबंदियों के बीच वायु प्रदूषण में सुधार देखने को मिल रहा है। सतह पर चलने वाली हवाओं की रफ्तार बढ़ने व पुराने डीजल वाहन पर रोक लगने के कारण नोएडा और ग्रेटर नोएडा की हवा गंभीर श्रेणी से उतरकर बहुत खराब श्रेणी में बरकरार है।

पाल्यूशन फैलाने वाले वाहनों पर पाबंदी

बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए कुछ कड़े प्रतिबंध लगाए गए हैं। अभी डीजल के बड़े वाहनों के साथ फैक्ट्रियों में डीजल जनरेट सेट चलाने पर पाबंदी लगाई गई है। ग्रेप के कारण बीएस-4 के वाहनों के परिवहन पर प्रतिबंध लगा हैं। बीएस-6 के मुकाबले बीएस-4 इंजन वाले वाहन ज्यादा प्रदूषण फैलाते हैं। बीएस-4 वाहनों से निकलने वाले सल्फर की मात्रा पांच गुना तक ज्यादा हो सकती है।

इनसाइड

एक दिन में 13 मरीजों में डेंगू की पुष्टि, मच्छरों का लार्वा मिलने पर 5 परिवारों को नोटिस

स्वास्थ्य विभाग की ओर से डेंगू से निपटने के लिए टीम बनाई गई है। नोएडा में डेंगू के मरीजों की संख्या बढ़ रही है। ताजा मामले में एक दिन में 13 मरीजों में डेंगू की पुष्टि हुई है।

नोएडा। जिले में डेंगू के मरीजों का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। 13 नए मरीजों में डेंगू की पुष्टि हुई है। अलग अलग अस्पताल में इनका इलाज चल रहा है। स्वास्थ्य विभाग की और से बनाई गई सेंटिनल लैब में इनकी जांच की गई है। अब तक 138 मरीजों में डेंगू की पुष्टि हुई है। निजी अस्पताल से आने वाले डेंगू के संदिग्ध सैंपल की जांच जिला अस्पताल और चाइल्ड पीजीआई में बनाई गई लैब में की जा रही है। मलेरिया विभाग की टीम ने शनिवार को बरौला गांव में 85 घरों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पांच घरों में मच्छरों का लार्वा मिलने पर मकान मालिक को नोटिस जारी किया गया है। विभाग की ओर से इन जगह फागिंग और एंटी लार्वा का छिड़काव कराया जाएगा।

डेंगू से बचाव के लिए जागरूकता

जिला मलेरिया अधिकारी राजेश शर्मा का कहना है कि मच्छर का लार्वा मिलने पर संचारी रोग नियंत्रण अभियान के दौरान टीमों ने पहले से भरे पानी के ऊपर मच्छर का लार्वा मिलने पर पांच परिवारों को नोटिस थमाया है। लोगों को साफ सफाई रखने और गंदगी न फैलाने के लिए प्रेरित किया है। अपने स्तर से दवा का छिड़काव करा रहे हैं व मलेरिया व डेंगू से बचाव को जागरूकता ला रहे हैं। मच्छरजनित बीमारियों से बचाव के लिए जरूरी है कि किसी झोलाछाप से इलाज न कराएं। रात को सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें। आसपास पानी का जमाव और गंदगी न होने दें। लक्षण दिखने पर सरकारी अस्पतालों की पैथोलाजी लैब में खून की जांच कराएं। बुखार आने पर चिकित्सक को बताएं और उसी के अनुसार दवा लें। डेंगू की रोकथाम के लिए रोस्टर के अनुसार प्रतिदिन फागिंग और एंटी लार्वा का छिड़काव हो रहा है।

इंडिया वाटर वीक में शामिल हुए डा. संजय सिंह

ग्रेटर नोएडा। अमृत सरोवर के तहत तालाबों का निर्माण तो हो रहा है, पर जिस स्वरूप में इसे करने की जरूरत है, वह नहीं हो पा रहा। ज्यादातर जगह लोगों ने तालाब बनाने के नाम पर मिट्टी खोद दी है। उसके आसपास कुर्सी लगाकर बैठने की व्यवस्थाएं की है। तालाब एक जीवित इकाई है। तालाब ता और लाब से बना है। जो स्वतः वर्षाजल से लबालब हो सके। तालाब एक गांव की विविधता का केंद्र हैं। ऐसी जगह तालाब का निर्माण हो, जहां पानी स्वतः एकत्र हो जाए। तालाब के निर्माण में पक्का काम करने की आवश्यकता नहीं है।

नोएडा एक्सप्रेस-वे पर 18 सवारियों से भरी बस बनी आग का गोला, सभी यात्री सुरक्षित

सवारियों से भरी ट्रैवलर के इंजन में अज्ञात कारणों से रविवार दोपहर 12 बजे के करीब आग लग गई। इंजन से धुआं निकलता देख चालक ने बस को किनारे किया और सभी सवारियों को सकुशल बाहर निकाल लिया।

नोएडा। नोएडा एक्सप्रेस-वे पर 18 सवारियों से भरी ट्रैवलर बस के इंजन में रविवार दोपहर 12 बजे आग लग गई। इंजन से धुआं निकलता देख चालक ने बस को किनारे किया और सभी सवारियों को सकुशल बाहर निकाल लिया। करीब 20 मिनट तक बस आग का गोला बनी रही।

सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की एक गाड़ी की मदद से 20 मिनट में आग को बुझा लिया गया। इस दौरान थोड़ी देर के लिए यातायात भी बाधित रहा। इसमें किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई है, हालांकि बस पूरी तरह से जल गई।

पंचशील अंडरपास के पास लगी आग

इंजन में तकनीकी खामी की वजह से आग लगने की बात कही जा रही है। सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर कोतवाली पुलिस मामले की जांच कर रही है। एक्सप्रेस-वे कोतवाली प्रभारी सुधीर कुमार ने बताया कि परी चौक से 18 सवारियों को बैठाकर ट्रैवलर नोएडा के सेक्टर-37 के लिए आ रही थी। जब बस पंचशील अंडरपास के पास पहुंची तभी इंजन से धुआं निकलने लगा।

चालक ने दिखाई सूझबूझ

चालक ने तुरंत वाहन रोक दिया और सवारियों को बाहर निकाला। उधर से गुजर रही पुलिस की टीम ने इसकी जानकारी अग्निशमन विभाग को दी। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की एक गाड़ी की मदद से आग पर काबू पाया गया।

टायर में भी आग लगने के कारण काला धुआं दूर से ही नजर आ रहा था। मौके पर भीड़ जमा रही और घटना का वीडियो बनाती रही। बस चालक टोनी सैनी ने वाहन के मालिक को घटना की जानकारी दी। सूचना मिलने के बाद वाहन स्वामी भी मौके पर पहुंच गए।

उपराष्ट्रपति की सुरक्षा में बड़ी चूक, ड्यूटी से नदारद दो कोतवाल समेत 15 पुलिसकर्मी पर गिरी गाज

ग्रेटर नोएडा में एक नवंबर से इंडिया एक्सपोमार्ट में चल रहे इंडिया वाटर वीक का आयोजन हो रहा था। शनिवार को इंडिया वाटर वीक के समापन समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ पहुंचे थे जहां उनकी सुरक्षा व्यवस्था में बड़ी लापरवाही देखने को मिली।

ग्रेटर नोएडा। देश की राजधानी दिल्ली से सटे ग्रेटर नोएडा में आयोजित इंडिया वाटर वीक (India Water Weej) के समापन कार्यक्रम में शनिवार को आए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की सुरक्षा व्यवस्था में बड़ी चूक (Vice President Security Lapse) देखने को मिली। उपराष्ट्रपति की सुरक्षा व्यवस्था में तैनात 15 पुलिसकर्मी ड्यूटी से नदारद मिले। इनमें दो थाना प्रभारी, आइटी सेल के निरीक्षण, महिला दारोगा व अन्य शामिल हैं। गौतमबुद्ध नगर पुलिस कमिश्नरेट ने सभी की अनुपस्थिति दैनिक रोजनामचे में दर्ज कर दी है।

उपराष्ट्रपति की सुरक्षा में लापरवाही

बता दें कि ग्रेटर नोएडा में एक नवंबर से इंडिया एक्सपो मार्ट (India Expo Mart) में चल रहे इंडिया वाटर वीक का आयोजन हो रहा था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू (President Draupadi Murmu) और सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ (Yogi Adityanath) ने किया था। शनिवार को इंडिया वाटर वीक के समापन समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय राज्य मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल, उत्तर प्रदेश जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह समेत कई अन्य बड़े नेता, सांसद व विधायक मौजूद थे।

नोएडा में 9 नवंबर से कक्षा एक से आठ तक की आफलाइन संचालित होगी कक्षाएं

जिले के सभी बोर्ड की कक्षा एक से आठवीं तक की कक्षाएं नौ नवंबर से फिर आफलाइन संचालित की जाएंगी। बेसिक शिक्षा अधिकारी ने ट्वीट किया है कि जिलाधिकारी के आदेश के अनुसार नौ नवंबर से शिक्षण कार्य पूर्ववत प्रारंभ होगा।

ग्रेटर नोएडा। जिले के सभी बोर्ड की कक्षा एक से आठवीं तक की कक्षाएं नौ नवंबर से फिर आफलाइन संचालित की जाएंगी। बेसिक शिक्षा अधिकारी ने ट्वीट किया है कि जिलाधिकारी के आदेश के अनुसार नौ नवंबर से शिक्षण कार्य पूर्ववत प्रारंभ होगा। बता दें दिल्ली एनसीआर में प्रदूषण के कारण जिले के सभी स्कूलों में कक्षा एक से आठ की कक्षाएं चार नवंबर से आनलाइन संचालित हो रही हैं।

क्या है नोएडा में प्रदूषण का हाल

दिल्ली-एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के चौथा चरण लागू होने के बाद एक्यूआइ में सुधार देखने को मिल रहा है। रविवार सुबह हवा की रफ्तार तेज रहने से दिन में धुंध की चादर छटने से राहत मिली। न्यूनतम दृश्यता भी अधिक दर्ज की गई। न्यूनतम दृश्यता बढ़ने के साथ आसमान साफ नजर आया। हालांकि सांस रोगियों के हवा अभी भी नुकसानदेह है। डाक्टरों ने लोगों को मास्क लगाकर घरों से बाहर निकलने की सलाह दी है।

किस शहर में कितना रहा पॉल्शून का लेवल

रविवार को दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) 339, नोएडा का 330, फरीदाबाद का 311, गुरुग्राम का 308, ग्रेटर नोएडा का एक्यूआइ 299, गाजियाबाद का 288 दर्ज किया गया। एनसीआर में गाजियाबाद और ग्रेटर नोएडा को छोड़कर सभी शहर की हवा बहुत खराब श्रेणी में रही। सुबह सात बजे से नौ बजे हल्की धुंध छाई रही, लेकिन जैसे-जैसे हवा की रफ्तार और सूरज की रोशनी बढ़ी न्यूनतम दृश्यता बढ़ती चली गई। लेकिन, शाम होते-होते प्रदूषण फिर से बढ़ने लगा। नोएडा में शाम सात बजे सेक्टर-125 को छोड़कर सेक्टर-1, सेक्टर-62 और सेक्टर-116 क्षेत्र की हवा बहुत खराब श्रेणी में रही।

अगले तीन दिन बहुत खराब की श्रेणी में रहेगी एक्यूआइ

वायु प्रदूषण का पूर्वानुमान लगाने वाली संस्था वायु गुणवत्ता और मौसम पूर्वानुमान तथा अनुसंधान प्रणाली (सफर) के मुताबिक सतह पर चलने वाली हवा की रफ्तार को रविवार को आठ से 12 किलोमीटर प्रतिघंटा रही। आगामी तीन दिनों में एक्यूआइ के बहुत खराब श्रेणी में रहने की संभावना है।

इनसाइड

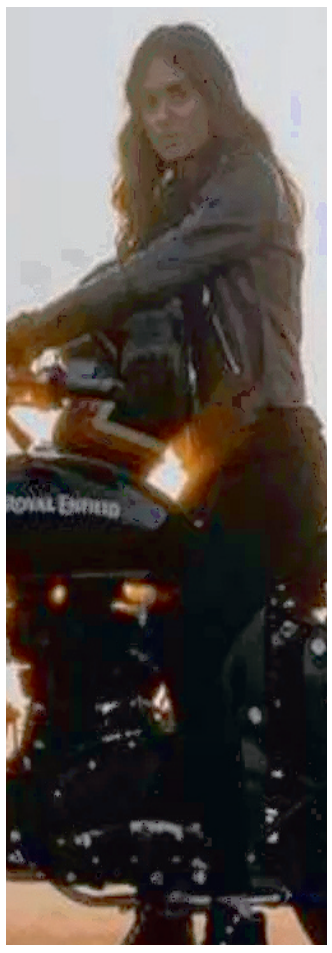

पहले से ज्यादा सेफ हो जाएगी आपकी बाइक ! इन हाईटेक तरीकों से सुरक्षित होगा सफर

अगर आप बाइक लवर हैं और चाहते हैं कि आप हमेशा सुरक्षित यात्रा करें तो ये खबर आपके लिए है। इस खबर के माध्यम से बताने जा रहे हैं उन पार्ट्स के बारे में जिनको लगवा कर आप अपनी बाइक को और भी एडवांस कर सकते हैं।

नई दिल्ली। टू-व्हीलर निर्माण करने वाली कंपनियां अपनी वाहनों के आधुनिकरण की ओर काफी ध्यान दे रही हैं, ताकि बाइक चलना अधिक सुरक्षित हो सके। मोटरसाइकिल में कई ऐसे एडवांस फीचर्स जुड़ रहे हैं, जिसके चलते आप कह सकते हैं कि टू-व्हीलर से लॉन्ग ड्राइव पर जाना सेफ है। आइये उन फीचर्स के बारे में आसान भाषा में समझते हैं।

एंटी ब्रेकिंग सिस्टम

वर्तमान में एंटी ब्रेकिंग सिस्टम हर एक बाइक के लिए अनिवार्य हो गया है। इसका काम अचानक ब्रेक मारते समय बाइक को फिसलने से रोकना है। मोटरसाइकिल में ब्रेकिंग सिस्टम होता है तो राइडर्स इमर्जेंसी के दौरान ब्रेक मारते समय निश्चिंत रहते हैं।

बाइक से लंबी राइड पर जा रहे हैं तो किन बातों का ध्यान रखें

बाइक से लंबी राइड पर जा रहे हैं तो इन बातों का ध्यान रखें, खासकर सर्दियों के मौसम में

एडॉप्टिव हेडलाइट

एडॉप्टिव हेडलाइट की रोशनी अच्छी होती है इसके साथ-साथ काफी सेफ भी होती है, क्योंकि कई बार आपने खुद महसूस किया होता कि सामने से आ रही वाहन की रोशनी आप पर पड़ती है तो कुछ सेकेंड के लिए आपको सामने की तरफ साफ दिखाई नहीं पड़ता है। इसके अलावा इस हेडलाइट से सामने की तरफ भी भरपूर दिखता है।

टायर मॉनिटरिंग सिस्टम

अमूमन कार में ये मॉनिटरिंग सिस्टम देखने को मिलता है। हालांकि, बाइक में ये फीचर्स लगते ही बाइक और भी अधिक सेफ हो जाती है। टायर मॉनिटरिंग सिस्टम का काम टायरों के व्यवहार की रियल टाइम इंफॉर्मेशन देना है। अगर आपके बाइक में हवा कम है या पंचर है तो सामने लगे डैशबोर्ड आपको लाल बत्ती जलते हुए दिखेगी।

एयरबैग क्लाथिंग

एयरबैग क्लाथिंग एक विशेष रूप की ड्रेस होती है, जिसे अधिकतर लॉन्ग ड्राइव पर जा रहे राइडर्स या फिर रेसिंग ट्रैक पर रेस करने वाले राइडर्स इस्तेमाल करते हैं। इस कपड़े को खासतौर से तैयार किया जाता है, जिसके अंदर एयबैग लगा हुआ रहता है, किसी भी एक्सिडेंट के दौरान फौरन एयरबैग खुल जाता है और राइडर को कम चोट पहुंचती है। इसके अलावा बाइकर्स के लिए राइडिंग गियर आता है, जिसमें जैकेट के अंदर मजूबत वेस्ट्स, लेग गार्ड, बैकगार्ड, हैंडगार्ड आदि लगा हुआ होता है।

पेट्रोल डीजल की बढ़ती कीमतों की चिंता करें खत्म! घर ले आएं ये हाइब्रिड कारें

भारतीय बाजार में पेट्रोल डीजल की कीमतें आसमान छू रही है।आजकल लोगों के पास पेट्रोल डीजल के आलावा इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड एक अच्छा ऑप्सन बनकर उभर रहा है। आप अपने लिए हाइब्रिड कार लेने की सोच रहे हैं तो आज हम आपके लिए इन गाड़ियों की लिस्ट लेकर आए हैं।

भारतीय बाजार में पेट्रोल डीजल की कीमतें आसमान छू रही है।आजकल लोगों के पास पेट्रोल डीजल के आलावा इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड एक अच्छा ऑप्सन बनकर उभर रहा है। आप अपने लिए हाइब्रिड कार लेने की सोच रहे हैं तो आज हम आपके लिए इन गाड़ियों की लिस्ट लेकर आए हैं।

नई दिल्ली। पेट्रोल डीजल की बढ़ती कीमत के कारण लोगों के जेब पर खास असर पड़ रहा है। जिसके कारण लोगों को जेब पर अच्छा खासा असर पड़ता है। इसके कारण लोग इलेक्ट्रिक वाहन या हाइब्रिड गाड़ियों को अपनी पसंद की लिस्ट में लेकर आ रहे है।

Toyota Urban Cruiser Hyryder

कंपनी ने इस कार को कुल दो वेरिएंट में पेश किया है। जिसमे से एक 1.5L माइल्ड-हाइब्रिड पेट्रोल इंजन और एक 1.5L मजबूत हाइब्रिड पेट्रोल इंजन शामिल है। आपको बता दे मजबूत हाइब्रिड इंजन 115 bhp की पावर जनरेट करता है। इसका पीक टॉक आउटपुट 141 nm का है। वहीं इसका इंजन एक e-drive ट्रांसमिशन से लैस है। इसके दोनों मोटर मिलाकर 85 किलोवाट का आउटपुट जनरेट करता है। इसकी शुरुआती कीमत 15.11 लाख से 18.99 लाख रुपये तक है।

Maruti Suzuki Grand Vitara

ये टोयोटा अर्बन कूजर के तरह ही है। इसमें भी आपको दो पेट्रोल इंजन का ऑप्शन मिलता है। जिसमें एख माइल्ड हाइब्रिड यूनिट और दूसरी 1.5L मजबूत हाइब्रिड है। कंपनी दावा करती है कि ये कार माइलेज 27.97 kmpl का देती है। लोग इस कार को जमकर खरीद रहे है। इसके टॉप स्पेक मॉडल की कीमत 19.65 लाख रुपये तक जाती है।

Honda City Hybrid e:HEV

कंपनी ये दावा करती हैं कि ये कार माइलेज 26.5 kmpl का देती है। वहीं इसमें 1.5 लीटर का हाइब्रिड पावरट्रेन है जो 126 पीएस की पावर और 253 nm का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इसके साथ ही कंपनी ने इस कार में एक eCVT गियरबॉक्स दिया है। इसकी कीमत 19.49 लाख रुपये है।

बाइक से लंबी राइड पर जा रहे हैं तो इन बातों का ध्यान रखें, खासकर सर्दियों के मौसम में

हल्की ठंड अब दस्तक दे चुकी है। इस समय अगर आप अपनी बाइक से लंबी राइड पर जा रहे हैं तो आपको कई बातों का ख्याल रखना चाहिए ताकि आपकी बीच रास्ते में किसी भी परेशानी का सामना ना करना पड़े।

नई दिल्ली। अब हल्की थंड ने दस्तक दे दिया है। ऐसे में अगर आप बाइक चलाने के शौकीन हैं तो आपको ठंड में कुछ खास बातों का ख्याल रखना चाहिए ताकि आपको किसी भी परेशानी का सामना ना करना पड़े। सर्दियों में खराब मौसम की वजह से राइडिग में कई दिक्कतें आ सकती है। इससे दुर्घटना होवे की संभावना भी अधिक बढ़ जाती है। आज हम आपको कुछ ऐसे टिप्स बताएंगे जिसे जानकर आप ठंड में राइड का मजा ले सकते हैं।

थर्मल गारमेंट्स

जब ठड़ी आप बाइक से राइड करने निकले तो ठंड के मौसम में आपके पास थर्मल गारमेंट्स यानि ऐसे कपड़े जो आपके शरीर के हिस्सों में हवा ना जाने दे और आपको थंडी हवा से बचा कर रखें। इस समय पर आप अपनी बाइक की स्पीड का भी खास ख्याल रखें, बाइक तेज स्पीड में होती हैं तो आपको ठंड लग सकती है। इसलिए हमेशा स्पीड का ख्याल जरूर रखें।

क्या आपकी बाइक भी है इन सेफ्टी फीचर्स से लैस

पहले से ज्यादा सेफ हो जाएगी आपकी बाइक ! इन हाईटेक तरीकों से सुरक्षित होगा सफर

गर्म चीजें अपने साथ रखें

अगर आप ठंड में बाइक चलाना पसंद करते हैं तो आपको कई बातो का ख्याल रखना चाहिए अगर आप अधिक दूरी के लिए जा रहे हैं तो बीच -बीच में बाइक रोक कर कुछ गर्म चीज खा पी ले ताकि आपकी बाड़ी को हीट मिलती रही और आप आराम से लंबे दबरी का सफर तय कर ले।

इंडिकेटर, हेडलाइट पहले से रखें ठीक

संबे राइड पर जाने से पहले बाइक का इंडिकेटर, हेडलाइट और बैक लाइट को चेक कर लेना चाहिए ताकि आप पहले से ही बाइक को दुरुस्त कर ले। सर्दियों में ये सब चीजें सामने देखने में काफी मदद करती है। इससे आप होने वाले एक्सीडेंट से बच सकते है।

बाइक की बैटरी और इंजन का रखें ख्याल

सर्दी के मौसम में बाइक के बैटरी पर भी खास असर देखने को मिलता है। इसलिए समय के साथ साथ बैटरी का भी ख्याल रखना चाहिए । इसके साथ ही इंजन की भी देखरेख आपको करते रहना चाहिए क्योंकि बिना इंजन बाइक अधूरी है।

भारतीय बाजार में मौजूद हैं ये धांसू सीएनजी गाड़ियां

भारतीय बाजार में पेट्रोल डीजल की कीमत काफी तेजी से बढ़ते जा रही है।आज के समय में सीएनजी और इलेक्ट्रिक वाहन एक बेहतर विकल्प बनते जा रहे हैं।आप अपने लिए एक नई कार खरीदने की प्लानिंग कर रहे हैं तो आज हम सीएनजी गाड़ियों की लिस्ट लेकर आए हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में आज के समय में एक से बढ़कर एक सीएनजी गाड़ियां मौजूद है। जिससे आपके पास एक बेहतर ऑप्शन है। वहीं पेट्रोल डीजल की कीमत बढ़ने के कारण लोगों के लिए सीएनजी आज एक बेहतर विकल्प बनकर उभर रहा है।आज हम आपके लिए सीएनजी गाड़ियों की लिस्ट लेकर आए है।

Maruti Suzuki Alto S-CNG

मारुति सुजुकी ऑल्टो 800 एस - सीएनजी भारतीय बाजार में सबसे सस्ती कार है। वर्तमान में इस कार में कंपनी फिटेड सीएनजी किट के साथ आ रही है।आपको बता दे आल्टो एलएक्सआई (ओ) वेरिएंट के साथ पेश की गई है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 5.03 लाख रुपये है। ये 796 सीसी पेट्रोल इंजन सीएनजी मोड में 40 एचपी और एनएम का पीक टॉर्क बनाती है। इसे 5 स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ -जोड़ा गया है।

Maruti Suzuki S-Presso S-CNG

भारतीय बाजार में मारुति एस -प्रेसो के दो वेरिएंट - एलएक्सआई और वीएक्सआई के साथ ऑप्शनल सीएनजी किट प्रदान करती है। इसकी कीमत 5.90 लाख रुपये और 6.10 लाख रुपये है। इसमें सीएनजी किट के साथ 1.0लीटर तीन सिलेंडर इंजन मिलता है। जो 56 हॉर्स पावर और 8.21 एनएम टॉर्क जनरेट करती है।

Tata Tiago iCNG

टाटा मोटर्स ने जनवरी 2022 में टियागो और टिगोर सब 4 मीटर आईसीएनजी वेरिएंट को पेश किया है। इसके लिए आपको 6.30 लाख रुपये देने होगे। कंपनी ने टाटा टियागो सीएनजी को कुल चार वेरिएंट्स - XE, XM, XT, और XZ है। सीएनजी स्पेक में 1.2 लीटर तीन सिलेंडर रेवोट्रॉन पेट्रोल इंजन 73 एचपी और 95 एनएम जनरेट करती है। ये 5 एमटी के साथ आती है।

संपादकीय विशेष

शिशु सुरक्षा दिवस/ 7 नवंबर विशेष)

मृत्यु दर में कमी सुखद संकेत

रमेश सर्राफ धमोरा

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया के अनुसार देश 2030 तक सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) प्राप्त करने की दिशा में बढ़ रहा है। मांडविया ने इस उपलब्धि पर देश को बधाई देते हुए सभी स्वास्थ्यकर्मियों, सेवा से जुड़े लोगों तथा समुदाय के सदस्यों को शिशु मृत्यु दर कम करने में अथक कार्य करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होने कहा एसआरएस 2020 ने 2014 से शिशु मृत्यु दर में लगातार गिरावट दिखाई है।

हर साल सात नवंबर को शिशु सुरक्षा दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों में शिशुओं की सुरक्षा से संबंधित जागरुकता फैलाना और शिशुओं की उचित देखभाल कर के उनके जीवन की रक्षा करना है। उचित सुरक्षा न हो पाने के कारण दुनिया में बहुत सारे नवजात मौत के आगोश में चले जाते है। हमारे देश में नवजात मृत्यु दर अधिक रही है। मगर सरकार ने इस दिशा में बेहतर प्रयास किए हैं जिसकी बदौलत इसमें कमी आई है। नमूना पंजीकरण प्रणाली (एसआरएस) सांख्यिकीय रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत में पांच वर्ष से कम आयु में मृत्यु दर 2019 में प्रति एक हजार जीवित शिशुओं में से 35 के मुकाबले 2020 में घटकर 32 रह गई है। सबसे अधिक गिरावट उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में दर्ज की गई है। भारत के महापंजीयक द्वारा हाल ही में जारी की गयी एक रिपोर्ट के अनुसार देश में 2014 से शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) पांच वर्ष से कम उम्र के शिशुओं की मृत्यु दर (यू5एमआर) और नवजात मृत्यु दर (एनएमआर) में कमी आई है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया के अनुसार देश 2030 तक सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) प्राप्त करने की दिशा में बढ़ रहा है। मांडविया ने इस उपलब्धि पर देश को बधाई देते हुए सभी स्वास्थ्यकर्मियों, सेवा से जुड़े लोगों तथा समुदाय के सदस्यों को शिशु मृत्यु दर कम करने में अथक कार्य करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होने कहा एसआरएस 2020 ने 2014 से शिशु मृत्यु दर में लगातार गिरावट दिखाई है। भारत केन्द्रित कार्यक्रमों, मजबूत केंद्र-राज्य साझेदारी तथा सभी स्वास्थ्यकर्मियों के समर्पण से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शिशु मृत्यु दर के 2030 एसडीजी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार है।

देश में पांच वर्ष से कम उम्र के शिशुओं की मृत्यु दर (यू5एमआर) में 2019 से तीन अंकों की (वार्षिक कमी दर 8.6 प्रतिशत) देखी गई है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में पांच वर्ष से कम आयु में मृत्यु दर 2019 में प्रति 1,000 जीवित शिशुओं में से 35 के मुकाबले 2020 में घटकर 32 रह गई है। रिपोर्ट के अनुसार शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) में भी 2019 में प्रति 1000 जीवित शिशुओं में से 30 के मुकाबले 2020 में प्रति 1000 जीवित शिशुओं में से 28 के साथ दो अंकों की गिरावट दर्ज की गई है और वार्षिक गिरावट दर 6.7 प्रतिशत रही।

रिपोर्ट के अनुसार अधिकतम आईएमआर मध्य प्रदेश (43) और न्यूनतम केरल (6) में देखा गया है। देश में आईएमआर 2020 में घटकर 28 हो गया है। जो 2015 में 37 था। पिछले पांच वर्ष में नौ अंकों की गिरावट और लगभग 1.8 अंकों की वार्षिक औसत गिरावट आई है। इसमें कहा गया है इस गिरावट के बावजूद राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक 35 शिशुओं में से एक ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक 32 शिशुओं में से एक और शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक 52 शिशुओं में से एक की अभी भी जन्म के एक वर्ष के भीतर मृत्यु हो जाती है। रिपोर्ट के अनुसार देश में जन्म के समय लिंग अनुपात 2017-19 में 904 के मुकाबले 2018-20 में तीन अंक बढ़कर 907 हो गया है। केरल में जन्म के समय उच्चतम लिंगानुपात (974) है जबकि उत्तराखंड में सबसे कम (844) है।

नवजात मृत्यु दर भी 2019 में प्रति 1,000 जीवित शिशुओं में से 22 के मुकाबले दो अंक घटकर 2020 में 20 रह गई। रिपोर्ट के अनुसार देश के लिए कुल प्रजनन दर (टीएफआर) भी 2019 में 2.1 से घटकर 2020 में 2.0 हो गई है। बिहार में 2020 के दौरान उच्चतम टीएफआर (3.0) दर्ज गई जबकि दिल्ली, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में न्यूनतम टीएफआर (1.4) दर्ज की गई। इसके अनुसार छह राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों, केरल (4), दिल्ली (9), तमिलनाडु (9), महाराष्ट्र (11), जम्मू और कश्मीर (12) और पंजाब (12) ने पहले ही नवजात मृत्यु दर के एसडीजी लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। रिपोर्ट के अनुसार ग्यारह राज्य और केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) - केरल (8), तमिलनाडु (13), दिल्ली (14), महाराष्ट्र (18), जम्मू कश्मीर (17), कर्नाटक (21), पंजाब (22), पश्चिम बंगाल (22), तेलंगाना (23), गुजरात (24) और हिमाचल प्रदेश (24) पहले ही यू5एमआर के एसडीजी लक्ष्य को प्राप्त कर चुके हैं।

देश में स्वास्थ्य संबंधी संसाधनों की कमी के कारण यह समस्या और बढ़ जाती है। सरकारों ने इस समस्या से निपटने के लिए बहुत सी योजनाएं लागू की है। मगर बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी तथा जागरुकता की कमी के कारण शिशुओं की मृत्यु दर में पूर्णतः कमी नहीं आई है। उचित पोषण के भाव में अब भी कई बच्चे दम तोड़ देते है। ग्रामीण इलाकों में शिक्षा की कमी एवं प्रशिक्षित नर्सों व दाइयों की कमी के कारण भी विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है। भारत में नवजात बच्चों की मौतों के मामले सरकार के लिए बीते 75 साल बड़ी चुनौती भरे रहे हैं। हालांकि इसमें लगातार कमी आ रही है। सरकार की ओर से जो डाटा जारी किया गया है उसके मुताबिक 1951 में जहां प्रति 1000 नवजात बच्चों में 146 की मौत हो जाती थी। वहीं 2022 में घटकर अब 28 तक आ गई है। ये आंकड़ा उन बच्चों से जुड़ा है जिनकी मौत जन्म के एक साल के अंदर ही कमजोर इम्युनिटी, देखरेख, दवाओं की कमी, वायरस से होने वाली बीमारियां और कुपोषण के चलते हो जाती है।

भारत ने पिछले पांच दशकों में भले ही चिकित्सा क्षेत्र में प्रगति करते हुए शिशु मृत्यु दर को नियंत्रित किया है। लेकिन आज भी शिशुओं की मौत बड़ा सवाल है। वर्तमान में प्रत्येक एक हजार शिशुओं में से 28 की मौत एक साल का होने से पहले ही हो जाती है। भारत के महापंजीयक द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार साल 1971 में भारत की शिशु मृत्यु दर 129 थी। जो साल 2020 में बड़े सुधार के साथ 28 पर आ गई है। पिछले 10 सालों में तो इस में 36 प्रतिशत का सुधार देखने को मिला है। साल 2011 में देश की शिशु मृत्यु दर 44 थी जो अब 28 पर आ गई है। ऐसे में कहा जा सकता है कि देश ने चिकित्सा क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति की है।

आंकड़ों के अनुसार पिछले एक दशक में ग्रामीण क्षेत्र की शिशु मृत्यु दर में सबसे अधिक सुधार हुआ है। 2011 में ग्रामीण क्षेत्र में 48 पर रहने वाली शिशु मृत्यु दर साल 2020 में 31 पर आ गई थी। इसी तरह शहरी क्षेत्रों में 2011 में यह 29 पर पर रहने वाली शिशु मृत्यु दर 2020 में 19 पर आ गई थी। पिछले एक दशक में ग्रामीण क्षेत्रों की शिशु मृत्यु दर में 35 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 34 प्रतिशत की गिरावट आई है। देश के सकल घरेलू उत्पाद का 3.01 प्रतिशत स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च किया जाता है। जो काफी कम है। शिशु सुरक्षा सिर्फ सरकार की ही नहीं वरन हम सभी की जिम्मेदारी है। हम सभी को एकजुट होकर इसके लिए आगे आना होगा तब जाकर हम अपने देश के शिशुओं की सुरक्षा के मामले में अन्य देशों की तुलना में ऊपरी पायदान पर आएंगे।

संपादक की कलम से

अवधारणा या आवश्यकता जाने

श्री राम जी का घर छोड़ना हम सब को षड्यंत्रों में घिरे राजकुमार की करुण कथा दिखाता है और श्री कृष्ण का घर छोड़ना गूढ़ कूटनीति। श्रीराम आदर्शों को निभाते हुए कष्ट सहते दिखाई देते हैं पर श्रीकृष्ण षड्यंत्रों के हाथ नहीं आते उसके विपरीत स्थापित आदर्शों को चुनौती देते हुए एक नई परिपाटी को जन्म देते हैं। श्रीराम से श्री कृष्ण हो जाना एक सतत प्रक्रिया है और जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक.... ।।

श्रीराम जी को मारिचि जैसा भी भ्रमित कर सकता था लेकिन श्रीकृष्ण को पूतना की ममता भी नहीं उलझा पाती थी। श्रीराम अपने भाई के मूर्छित शरीर को देखकर बेसुध बिलख पड़े थे, लेकिन कृष्ण अभिमन्यु को दांव पर लगाने से भी नहीं हिचके थे ।

श्रीराम राजा थे, श्रीकृष्ण राजनीतिक...
श्रीराम रण थे, श्रीकृष्ण रणनीति...।।

श्रीराम मानवीय मूल्यों के लिए लड़े थे, श्रीकृष्ण मानवता के लिए... आज के युग में हर मनुष्य की यात्रा श्रीराम जैसी शुरू होनी चाहिये पर समय की जरूरत के अनुसार उसे श्रीकृष्ण जैसा बनना भी जरूरी है।

आज के युग में व्यक्ति को अपने मान सम्मान और खुशी को बचाए रखने के लिए श्रीकृष्ण होना उतना ही जरूरी है जितना श्रीराम ..।

सार :- इस युग में हम सब की यात्रा तब तक अधूरी है जब तक यह श्रीराम जी के विचारों से प्रारंभ ना हो और इसका समापन श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए विचारों पर...।।

- संजय बाटला

7 नवम्बर का इतिहास

मुग़ल सल्तनत के अंतिम शासक बहादुर शाह द्वितीय की 1862 में रंगून में मौत।
बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने 1876 में बंगाल के कांतल पाडा नामक गाँव में वन्दे मातरम्गीत की रचना की थी।
फ्रैंक्लिन डी रूज़वेल्ट 1944 में चौथी बार संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति नियुक्त हुए।
जार्डन में 1951 में संविधान पारित किया गया।
तत्कालीन सोवियत संघ ने 1968 में परमाणु परीक्षण किया।
अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने 1996 में मार्स ग्लोबल सर्वेयर का प्रक्षेपण किया।
अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने 1998 में भारत और पाकिस्तान पर लगे प्रतिबंधों में ढील देने की घोषणा की।
राष्ट्रपति चंद्रिका कुमारतुंगा ने 2003 में श्रीलंका में आपातकाल की घोषणा वापस ली।
भारत और आसियान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के लिए एक फ़ंड बनाने पर 2006 में सहमत हुए।
बिहार के जनतादल (यूनाइटेड) के लोकसभा सदस्यों ने 2008 में अपने पद से इस्तीफ़ा दिया।
कश्मीर के प्रसिद्ध कवि रहमान राही को 2008 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।
ग्वाटेमाला में 2012 में आये भूकंप से, 52 की मौत।

7 नवंबर को जन्मे व्यक्ति – Born on 7 November
प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कार्यकर्ता पंडित विश्वंभर नाथ का जन्म 1832 में हुआ।
अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वाले महान क्रांतिकारी बिपिन चंद्र पाल का जन्म 1858 को हुआ था।
विख्यात भौतिकविद और रसायनशास्त्री मेरी क्युरी का जन्म 1867 को हुआ था।
वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकट रामन का जन्म 1888 को हुआ था।
प्रमुख कृषक नेता तथा सांसद एन.जी. रंगा का जन्म 1900 को हुआ था।
प्रसिद्ध भारतीय कवि एवं साहित्यकार चंद्रकांत देवताले का जन्म 1936 को हुआ था।
दक्षिण भारतीय फ़िल्मों के सुपर स्टार भारतीय अभिनेता कमल हसन का जन्म 1954 को हुआ था।

7 नवंबर को हुए निधन – Died on 7 November
मुग़ल साम्राज्य के अंतिम बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र का 1862 में निधन।
भारत के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता और देश भक्त अश्विनी कुमार दत्त का 1923 में निधन।
भारत के एक प्रमुख चिकित्सक और देश सेवक जीवराज मेहता का 1978 में निधन।
भारत में हरित क्रांति के जनक सी. सुब्रह्मण्यम का 2000 में निधन।
पद्म भूषण से सम्मानित भारत की समाज सेविका तारा चेरियन का 2000 में निधन।
भारतीय निर्देशक और कवि बप्पादित्य बंदोपाध्याय का 2015 में निधन।

कैसे करें प्रदूषण को काबू?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के सीमांत क्षेत्रों में प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि इन प्रांतों ने तरह-तरह के प्रतिबंध और उपायों की घोषणा कर दी है। जैसे बच्चों की पाठशालाएं बंद कर दी हैं, पुरानी कारें सड़कों पर नहीं चलेंगी, बाहरी ट्रक दिल्ली में नहीं घुस पाएंगे, सरकारी कर्मचारी ज्यादातर काम घर से ही करेंगे। लोगों से कहा गया है कि वे मुखपट्टी का इस्तेमाल बढ़ाएं, घर के खिड़की-दरवाजे प्रायः बंद ही रखें और बहुत जरूरी होने पर ही बाहर निकलें।

ये सब बातें तो ठीक हैं और मौत का डर ऐसा है कि इन सब निर्देशों का पालन लोग-बाग सहर्ष करेंगे ही लेकिन क्या प्रदूषण की समस्या इससे हल हो जाएगी? ऐसा नहीं है कि खेती सिर्फ भारत में ही होती है और खटारा ट्रक और मोटरें भारत में ही चलती हैं। भारत से ज्यादा ये अमेरिका, यूरोप और चीन में चलती हैं। वहां हमसे ज्यादा प्रदूषण हो सकता है लेकिन वहां क्यों नहीं होता है? क्योंकि वहां की जनता और सरकार दोनों सजग हैं और सावधान हैं।

चीन ने पिछले कुछ साल में 40 प्रतिशत प्रदूषण कम किया है और हमारी दिल्ली प्रदूषण के रिकार्ड तोड़ रही है। इसकी गिनती दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में होती है। दिल्ली में दो सरकारें हैं। वे दोनों निढाल साबित हो रही हैं। अब कुछ लोग सर्वोच्च न्यायालय की शरण में जा रहे हैं। प्रदूषण रोकने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया जाए, क्या यह बात किसी भी सरकार और जनता के लिए शोभनीय है?

सरकारों ने इस दिशा में कुछ कोशिश जरूर की है। उन्होंने हजारों करोड़ रुपये की सहायता करके किसानों को मशीनें दिलवाई हैं ताकि वे पराली का चूरा करके उसे खेतों में दबा सकें लेकिन हमारे किसान भाई अपने घिसे-पिटे तरीकों से चिपटे हुए हैं। उनकी मशीनें पड़ी-पड़ी जंग खाती रहती हैं। पंजाब और हरियाणा में पिछले 15 दिनों में पराली जलाने के कई हजार मामले सामने आए हैं लेकिन उनको दंडित करनेवाला कोई आंकड़ा कहीं प्रकट नहीं हो रहा है।

सभी पार्टियां एक-दूसरे की टांग खींचने में मुस्तैदी दिखा रही हैं लेकिन वोट के लालच में फंसकर वे लाचार हैं। यदि पराली जलाने वाले दस-बीस दोषियों को भी दंडित किया गया होता तो हजारों किसान उनसे सबक सीखते। हमारे किसान बहुत भले हैं। उनमें अद्भुत परंपरा प्रेम होता है। सरकारों, समाजसेवियों और धर्मध्वजियों को चाहिए कि वे हमारे किसानों को प्रदूषण मुक्ति के लिए प्रेरित करें। उनकी प्रेरणा का महत्व सरकारी कानूनों से कहीं ज्यादा उपयोगी सिद्ध होगा।यदि हम भारतीय लोग इस दिशा में कुछ ठोस काम करके दिखा सकें तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि लाहौर और काठमांडो जैसे पड़ोसी देशों के शहर भी प्रदूषण मुक्त हो सकेंगे। प्रदूषित या स्वच्छ हवा को आप शासकीय और राष्ट्रीय सीमा में बांधकर नहीं रख सकते। उसे एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए पासपोर्ट और वीजा की जरूरत नहीं होती।

(लेखक, भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष हैं।)

गुरुनानक देव की वाणी में बाबरगाथा

रावेल पुष्प

सिखों के प्रथम गुरु गुरुनानक देव का काफी समय न सिर्फ देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण करने में बीता बल्कि देश से बाहर भी उन्होंने यात्राएं कीं और लोगों के जीवन में रंग भरने की कोशिश की। गुरुनानक देव जी ने अधिकतर जगहों पर रुक- रुक कर अपनी यात्राएं कीं। उनकी की गई यात्राओं को आमतौर पर चार हिस्सों में बांटा जाता है जिन्हें उदासियां कहा गया है। गुरुनानक देव जी 1497 से 1522 तक अपनी यात्राओं से जब वापस लौट चुके थे उसके कुछ समय बाद ही उज्बेकिस्तान में जन्मे जहीरूद्दीन मोहम्मद बाबर ने काबुल और कंधार को जीतने के बाद भारत पर आक्रमण किया। वैसे तो बाबर ने भारत पर कुल जमा पांच बार आक्रमण किया और आखिर पानीपत की लड़ाई में इब्राहिम लोदी को हराकर दिल्ली की गद्दी पर तख्तनशीन हुआ और मुगल साम्राज्य की स्थापना की।

अपने हमलों के दौरान मुगल सिपाहियों ने ऐमनाबाद को बुरी तरह लूटा और लोगों पर न सिर्फ बेरहमी से जुल्म किये बल्कि कई जगहों पर सामूहिक नरसंहार भी किया। इन घटनाओं को सुनने के बाद गुरुनानक देव जी काफी व्यथित हुए और उन्होंने स्वयं उस अंचल की यात्रा की तथा चश्मदीद लोगों से उन घटनाओं की जानकारी ली। उसके बाद उसका जिक्र अपनी रचनाओं में करते हुए बड़े खुले शब्दों में बाबर का विरोध करते हुए ये हुंकार भरी- बाबर तूं जाबर है!

अब भला कोई भी सत्ता विरोध के स्वर को कब बर्दाश्त कर सकती है न तब और न अब। इसलिए गुरुनानक देव जी को गिरफ्तार कर जेल की सलाखों के पीछे डाल दिया गया। उस जेल में पहले भी कई पुरुष और महिलाएं कैद थे। उन सबको सजा के तौर पर जेल में चक्की पीसने का काम दिया गया था। इसी क्रम में गुरुनानक देव जी को भी चक्की पीसने का काम मिला। गुरुनानक देव जी चक्की के सामने बैठकर भगवत भजन करने में लीन हुए तभी उनकी चक्की अपने आप चलने लगी। उसे देखकर सभी हैरान हो गए। जब ये सूचना बाबर तक गई, तो उन्हें ये विश्वास नहीं हुआ और वे स्वयं वहां पहुंचे और ये दृश्य देखकर हतप्रभ रह गए। उन्होंने गुरुनानक देव को खुदा का बंदा समझ कर उनसे क्षमा मांगते हुए रिहा कर दिया।

इसके बावजूद गुरुनानक देव जी ने उस दौरान जो अन्याय, अत्याचार के दृश्य देखे थे उसका जिक्र उन्होंने अपनी कुछ रचनाओं में किया है जिन्हें शबद कहा जाता है। वे सारी रचनाएं गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित भी हैं। उनकी इन रचनाओं को बाबरगाथा के नाम से भी जाना जाता है।

बाबरगाथा के अंतर्गत गुरुनानक देव जी की चार रचनाएं शामिल हैं जो विभिन्न रागों में हैं। गुरुनानक देव न सिर्फ एक अच्छे कवि थे, उन्हें राग रागिनियों का भी बहुत अच्छा ज्ञान था। गुरुनानक देव जी की एक रचना है, जिसे उन्होंने लालू नाम के एक बढ़ई को संबोधित किया है, जिसके यहां उन्होंने अपनी यात्राओं के दौरान आतिथ्य ग्रहण किया था और उसकी मेहनत से कमाई सूखी रोटी से दूध की धार निकाली थी।

वो रचना कुछ इस तरह है-
जैसी मैं आवे खसम की वाणी
तैसड़ा करीं गिआन वे लालो
पाप की जंज लै काबलहुं धाईया
जोरी मंगे दान वे लालो
और इसकी आखिरी पंक्तियां
आवन अठतरे जान सतानवै
सच की वाणी नानक आखे
सच सुणायसी सच की बेला

अर्थात हे लालो, बाबर अपने पापों की बारात लेकर हमारे देश पर चढ़ आया है और जबरदस्ती हमारी बेटियों के हाथ मांगने पर अमादा है। धर्म और शर्म दोनों कहीं छुप गए लगते हैं और झूठ अपना सिर उठा कर चलने लगा है। हमलावर हर रोज हमारी बहू बेटियों को उठाने में लगे हैं और जबरदस्ती उनके साथ निकाह कर लेते हैं। काजियों या पंडितों को वैवाहिक रस्में अदा करने का कोई मौका भी नहीं मिल पाता।

हे लालो, हमारी धरती पर खून के गीत गाए जा रहे हैं और उनमें लहू का केसर पड़ रहा है। लेकिन रचना के आखिर में एक भविष्यवाणी भी करते हैं कि आवन अठतरे यानि बाबर संवत 1578 को यहां आया है लेकिन फिर जान सतानबे यानि ये संवत 1597 में चला भी जाएगा जब एक और मरद उठ खड़ा होगा। भविष्य में हमने देखा कि बाबर जो संवत 1578 को आया था और फिर उसका बेटा हुमायूं और फिर हुमायूं को हराकर शेरशाह सूरी का शासन संवत 1597 में शुरू हो गया था।

पहली स्टेज, न करें इलाज में परहेज

योगेश कुमार गोयल

बढ़ते प्रदूषण तथा पोषक खानपान के अभाव में यह बीमारी एक महामारी के रूप में तेजी से फैल रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि हमारे देश में पिछले बीस वर्षों के दौरान कैंसर मरीजों की संख्या दोगुनी हो गई है। प्रतिवर्ष कैंसर से पीड़ित लाखों मरीज मौत के मुंह में समा जाते हैं।

कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी से जूझ रहे मरीजों में आशा की नई उम्मीद जगाने, लोगों को कैंसर होने के संभावित कारणों के प्रति जागरूक करने, प्राथमिक स्तर पर कैंसर की पहचान करने और इसके शीघ्र निदान तथा रोकथाम के प्रति लोगों में जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से भारत में प्रति वर्ष 7 नवंबर को 'राष्ट्रीय कैंसर जागरुकता दिवस' मनाया जाता है। वास्तव में यह महज एक दिवस भर नहीं है बल्कि कैंसर से लड़ रहे उन तमाम लोगों में नई चेतना का संचार करने और नई उम्मीद पैदा करने का विशेष अवसर भी है। आज हर व्यक्ति के लिए कैंसर एक ऐसा शब्द है, जिसे अपने किसी परिजन के लिए डॉक्टर के मुंह से सुनते ही परिवार के तमाम सदस्यों की सांसें गले में अटक जाती हैं और पैरों तले की जमीन खिसक जाती है। ऐसे में परिजनों को परिवार के उस अभिन्न अंग को सदा के लिए खो देने का डर सताने लगता है।

बढ़ते प्रदूषण तथा पोषक खानपान के अभाव में यह बीमारी एक महामारी के रूप में तेजी से फैल रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि हमारे देश में पिछले बीस वर्षों के दौरान कैंसर मरीजों की संख्या दोगुनी हो गई है। प्रतिवर्ष कैंसर से पीड़ित लाखों मरीज मौत के मुंह में समा जाते हैं। भारत में कैंसर के करीब दो तिहाई मामलों का बहुत देर से पता चलता है और कई बार तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। कैंसर के संबंध में यह समझ लेना बेहद जरूरी है कि यह बीमारी किसी भी उम्र में किसी को भी हो सकती है किन्तु अगर इसका सही समय पर पता लग जाए तो लाइलाज मानी जाने वाली इस बीमारी का अब उपचार संभव है। यही वजह है कि देश में कैंसर के मामलों को कम करने के लिए कैंसर तथा उसके कारणों के प्रति लोगों को जागरूक किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है ताकि वे इस बीमारी, इसके लक्षणों और इसके भयावह खतरे के प्रति जागरूक रहें। कैंसर से लड़ने का सबसे बेहतर और मजबूत तरीका यही है कि लोगों में इसके प्रति जागरुकता हो, जिसके चलते जल्द से जल्द इस बीमारी की पहचान हो सके और शुरुआती चरण में ही इसका इलाज संभव हो।

यदि कैंसर का पता शीघ्र लगा लिया जाए तो इसके उपचार पर होने वाला खर्च काफी कम हो जाता है। यही वजह है कि जागरुकता के जरिये इस बीमारी को शुरुआती दौर में ही पहचान लेना बेहद जरूरी माना गया है क्योंकि ऐसे मरीजों के इलाज के बाद उनके स्वस्थ एवं सामान्य जीवन जीने की संभावनाएं काफी ज्यादा होती हैं। हालांकि देश में कैंसर के इलाज की तमाम सुविधाओं के बावजूद अगर हम इस बीमारी पर लगाम लगाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं तो इसके पीछे इस बीमारी का इलाज महंगा होना सबसे बड़ी समस्या है। वैसे देश में जांच सुविधाओं का अभाव भी कैंसर के इलाज में एक बड़ी बाधा है, जो बहुत से मामलों में इस बीमारी के देर से पता चलने का एक अहम कारण होता है।

अब यह भी जान लें कि 'कैंसर' आखिर है क्या? जब हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी कमजोर हो जाती है तो शरीर पर विभिन्न प्रकार की बीमारियां हमला करना शुरू कर देती हैं। ऐसी परिस्थितियों में कई बार शरीर की कोशिकाएं अनियंत्रित होकर अपने आप तेजी से विकसित और विभाजित होने लगती हैं। कोशिकाओं के समूह की इस अनियंत्रित वृद्धि को ही कैंसर कहा जाता हैं। जब ये कोशिकाएं टिश्यू को प्रभावित करती हैं तो कैंसर शरीर के अन्य हिस्सों में भी फैलने लगता है और कैंसर की यह स्थिति बहुत घातक हो जाती है। दुनिया भर में कैंसर से लड़ने और इसे हराने के लिए निरन्तर चिकित्सीय खोज हो रही है और इन प्रयासों के चलते ही अब कैंसर का प्रारम्भिक स्टेज में तो सफल इलाज संभव भी है।

अगर शरीर में कैंसर होने के कारणों की बात की जाए तो हालांकि इसके कई तरह के कारण हो सकते हैं लेकिन अक्सर जो प्रमुख कारण माने जाते रहे हैं, उनमें मोटापा, शारीरिक सक्रियता का अभाव, व्यायाम न करना, ज्यादा मात्रा में अल्कोहल व नशीले पदार्थों का सेवन, पौष्टिक आहार की कमी इत्यादि इन कारणों में शामिल हो सकते हैं। कभी-कभार ऐसा भी होता है कि कैंसर के कोई भी लक्षण नजर नहीं आते किन्तु किसी अन्य बीमारी के इलाज के दौरान कोई जांच कराते वक्त अचानक पता चलता है कि मरीज को कैंसर है लेकिन फिर भी कई ऐसे लक्षण हैं, जिनके जरिये अधिकांश व्यक्ति कैंसर की शुरूआती स्टेज में ही पहचान कर सकते हैं।

कैंसर के लक्षणों में कुछ प्रमुख हैं- वजन घटना, रक्त की कमी होना, निरन्तर बुखार बने रहना, शारीरिक थकान व कमजोरी, चक्कर आना, उल्टी होना, दौरे पड़ना शुरू होना, आवाज में बदलाव आना, सांस लेने में दिक्कत होना, खांसी के दौरान खून आना, लंबे समय तक कफ रहना और कफ के साथ म्यूकस आना, कुछ भी निगलने में दिक्कत होना, पेशाब और शौच के समय खून आना, शरीर के किसी भी हिस्से में गांठ या सूजन होना, माहवारी के दौरान अधिक स्राव होना इत्यादि। कीमोथैरेपी, रेडिएशन थैरेपी, बायोलॉजिकल थैरेपी, स्टेम सेल ट्रांसप्लांट इत्यादि के जरिये कैंसर का इलाज होता है किन्तु यह प्रायः इतना महंगा होता है कि एक गरीब व्यक्ति इतना खर्च उठाने में सक्षम नहीं होता।

इनसाइड

सीसीपीए ने बीआईएस मानकों के उल्लंघन में घरेलू प्रेशर कूकर बेचने पर क्लाउडटेल पर लगाया जुर्माना

नई दिल्ली। केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) के मुख्य आयुक्त निधि खरे की अध्यक्षता में क्लाउडटेल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के विरुद्ध गुणवत्ता नियंत्रण आदेश, 2020 में निर्धारित अनिवार्य मानकों के उल्लंघन में घरेलू प्रेशर कूकरों को बेचने के मामले में आदेश पारित किया है। सीसीपीए ने स्वतः कार्रवाई शुरू की है। सीसीपीए ने अमेज़ॉन, फ्लिपकार्ट, पेटीएम मॉल, शॉपक्लूज और स्नैपडील सहित प्रमुख ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ-साथ इन प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत विक्रेताओं को नोटिस जारी किया था। क्लाउडटेल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड 'अमेज़ॉन बेसिक्स स्टेनलेस स्टील आउटर लिड प्रेशर कूकर, 4 एल (सीटी द्वारा प्रेशर अलर्ट नहीं देता)' प्रेशर कूकर का विक्रेता है। सीसीपीए ने क्लाउडटेल को उपभोक्ताओं को बेचे गए ऐसे 1,033 प्रेशर कूकरों को वापस लेने और उनकी कीमतों की प्रतिपूर्ति करने तथा 45 दिनों में अनुपालन रिपोर्ट जमा करने का निर्देश दिया। क्लाउडटेल को क्यूसीओ के उल्लंघन और उपभोक्ताओं के अधिकारों का अतिक्रमण करने वाले प्रेशर कूकर की बिक्री के लिए एक लाख का आर्थिक दण्ड देने का भी निर्देश दिया गया है।

चांस और स्किल के आधार पर तय होगी ऑनलाइन गेम्स की परिभाषा, फिर तय होगी जीएसटी दर

ऑनलाइन गेम्स में चांस और स्किल के आधार पर खेलों की परिभाषा तय करने के लिए सरकार विषेशज्ञों के साथ बातचीत कर रही है। इसके बाद ही ऑनलाइन गेम्स पर जीएसटी की दरों को तय किया जाएगा।

नई दिल्ली। सरकार ऑनलाइन गेम्स पर जीएसटी को लेकर तेजी से काम कर रही है। केंद्र और राज्य सरकार के जीएसटी अधिकारी, विशेषज्ञों के साथ मिलकर सभी ऑनलाइन गेम्स को 'गेम्स ऑफ स्किल' और 'गेम्स ऑफ चांस' में परिभाषित करने को लेकर काम कर रहे हैं, जिससे ऑनलाइन गेम्स पर टैक्स स्ट्रक्चर को बनाया जा सके। सूत्रों ने बताया कि जीएसटी काउंसिल की शनिवार को हुई बैठक में टेक्निकल विषेशज्ञों के साथ मिलकर 'गेम्स ऑफ स्किल' और 'गेम्स ऑफ चांस' की परिभाषा तय करने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई थी। ऑनलाइन गेम्स को लेकर जो कमेटी केंद्र सरकार की ओर से बनाई गई है, उसमें सभी राज्य नहीं है। इस कारण ड्राफ्ट रिपोर्ट को उनका पक्ष जानने के लिए सभी राज्यों को भेजा गया है।

ऑनलाइन गेम्स जीएसटी पर फाइनल रिपोर्ट

सूत्रों ने आगे बताया कि मंत्रियों का समूह (GoM) काउंसिल को ऐसी रिपोर्ट सौंपना चाहता है, जो कानूनी रूप में पूरी तरह से ठीक हो और कोई भी उसे अदालत में चुनौती न दे पाए। इसके लिए मंत्रियों का समूह सभी पक्षों के साथ बातचीत करना चाहता है। जैसे ही 'गेम्स ऑफ स्किल' और 'गेम्स ऑफ चांस' की परिभाषा तय हो जाएगी। ऑनलाइन गेम्स पर जीएसटी की दरों को तय कर लिया जाएगा।

दिसंबर में हो सकती है जीएसटी काउंसिल की बैठक

ऑनलाइन गेम्स, कैसिनो और हॉर्स रेसिंग पर टैक्स की दरों को तय करने के लिए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में हिमाचल प्रदेश और गुजरात चुनाव के बाद दिसंबर में जीएसटी काउंसिल की बैठक हो सकती है। इससे पहले जून में मेघालय के मुख्यमंत्री कोनराड संगमा की अध्यक्षता में मंत्रियों के समूह सिफारिश की थी ऑनलाइन गेम्स पर 28 प्रतिशत टैक्स लगना चाहिए।

ऑनलाइन गेम्स पर टैक्स

मौजूदा समय में 'गेम्स ऑफ चांस' के तहत आने वाले गेम्स पर 28 प्रतिशत और स्किल गेमिंग पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगाई जाती है। सेक्टर एक्सपर्ट्स का कहना है कि अगर पूरे ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर पर 28 प्रतिशत जीएसटी लगा दी जाती है, तो इससे प्रतिकूल असर होगा।

इंडियन ओवरसीज बैंक का मुनाफा दूसरी तिमाही में 32 फीसदी बढ़ा

एनटीवी न्यूज

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र के इंडियन ओवरसीज बैंक ने वित्त वर्ष 2022-23 की दूसरी तिमाही के नतीजे का ऐलान कर दिया है। बैंक को दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) में मुनाफा 33.2 फीसदी बढ़कर 501 करोड़ रुपये रहा है। बैंक को पिछले वर्ष की समान तिमाही में 376 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था।

बैंक ने रविवार को जारी बयान में बताया कि 30 सितंबर को समाप्त छमाही में बैंक का मुनाफा बढ़कर 893 करोड़ रुपये पहुंच गया, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में 703 करोड़ रुपये था। इसी तरह दूसरी तिमाही में बैंक की कुल आय बढ़कर 5,852.45 करोड़ रुपये पर पहुंच गई है जबकि जून तिमाही में यह 5,028 करोड़ रुपये थी।

इसी तरह इंडियन ओवरसीज बैंक का कुल कारोबार 4,23,589 करोड़ रुपये से बढ़कर 4,34,441 करोड़ रुपये हो गया है। वहीं, बैंक का जमा 2,60,045 करोड़ रुपये से बढ़कर 2,61,728 करोड़ रुपये हो गया। इस दौरान बैंक का गैर निष्पादित आस्तियों (एनपीए) का अनुपात पहले के 2.77 फीसदी से घटकर 2.56 फीसदी हो गया है, जबकि बैंक का सकल एनपीए 43 करोड़ रुपये रहा है। इसके अलावा बैंक का ब्याज से आय 4,717.61 करोड़ रुपये रही है, जो पिछले वर्ष समान अवधि में 4,255 करोड़ रुपये रही थी।

रिलायंस देश की सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता कंपनी, दुनिया में 20वें स्थान पर: फोर्ब्स

एनटीवी न्यूज

- दक्षिण कोरिया की दिग्गज कंपनी सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स ने पहला स्थान हासिल किया
- दुनिया की सबसे बड़ी ऑनलाइन विक्रेता कंपनी अमेजन इस सूची में 14वें स्थान पर

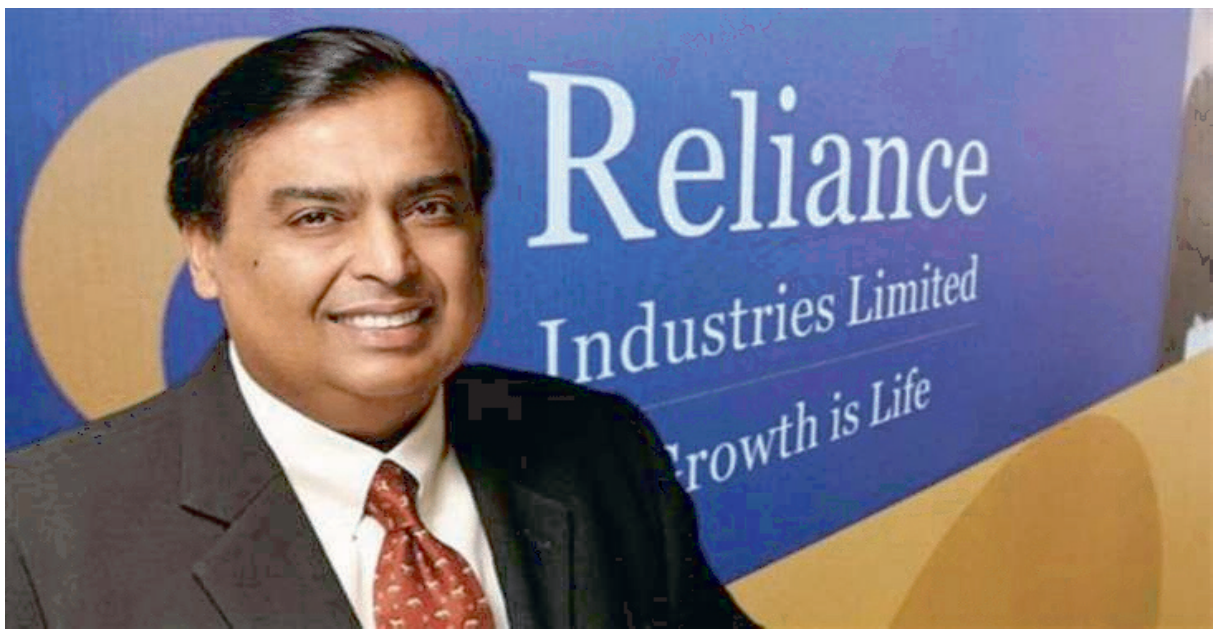

नई दिल्ली। अमेरिकी बिजनेस पत्रिका फोर्ब्स ने बाजार मूल्यांकन, आय और मुनाफे के हिसाब से रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) को भारत का सबसे अच्छा नियोक्ता बताया है। आरआईएल ने फोर्ब्स की सवश्रेष्ठ नियोक्ता रैंकिंग 2022 में देश की सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता और दुनिया में 20वां स्थान हासिल किया है।

फोर्ब्स ने रविवार को 2022 के लिए सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता रैंकिंग की सूची जारी की है, जिसमें राजस्व, लाभ और बाजार मूल्यांकन के लिहाज से देश की सबसे बड़ी कंपनी आरआईएल को भारत की सबसे बेहतर और दुनिया की 20वीं सबसे अच्छी नियोक्ता बताया गया है। फोर्ब्स की वैश्विक रैंकिंग सूची में दक्षिण कोरिया की दिग्गज कंपनी सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स ने पहला स्थान हासिल किया है। इसके बाद अमेरिकी कंपनी माइक्रोसॉफ्ट, आईबीएम, अल्फाबेट और ऐपल का स्थान है।

फोर्ब्स की सवश्रेष्ठ नियोक्ता रैंकिंग 2022 सूची में दूसरे से लेकर 12वें स्थान पर अमेरिकी कंपनियों का कब्जा है। इसके बाद जर्मनी की वाहन निर्माता कंपनी बीएमडब्ल्यू ग्रुप 13वें स्थान पर है, जबकि दुनिया की सबसे बड़ी ऑनलाइन विक्रेता अमेजन इस सूची में 14वें स्थान पर और फ्रांस की दिग्गज कंपनी डिकेथलॉन 15वें स्थान पर है। वहीं, रिलायंस इस वैश्विक सूची में 20वें स्थान पर मौजूद है। रिलायंस इस रैंकिंग में सर्वोच्च स्थान हासिल करने वाली भारतीय कंपनी है।

फोर्ब्स की इस सूची में रिलायंस जर्मनी की मर्सिडीज-बेंज, अमेरिकी की कोका-कोला, जापान की वाहन कंपनी होंडा और यामाहा तथा सऊदी अरामको से भी इस सूची में ऊपर है। फोर्ब्स की सवश्रेष्ठ नियोक्ता रैंकिंग 2022 सूची के मुताबिक शीर्ष 100 कंपनियों में रिलायंस के अलावा कोई भी भारतीय कंपनी शामिल नहीं है। इस सूची में एचडीएफसी बैंक 137वें स्थान पर है। इसके अलावा बजाज इस रैंकिंग में 173वें, आदित्य बिड़ला ग्रुप 240वें, लार्सन एंड टुब्रो 354वें, आईसीआईसीआई बैंक 365वें, अडाणी एंटरप्राइजेज 547वें और इंफोसिस 668वें स्थान पर है।

टॉप 10 में से 7 कंपनियों का बाजार मूल्यांकन 1.33 लाख करोड़ रुपये बढ़ा, रिलायंस को हुआ बड़ा फायदा

पिछले हफ्ता शेयर बाजार के अच्छा साबित हुआ। सेंसेक्स में 1.50 प्रतिशत से अधिक की बढ़त हुई है। टॉप 10 कंपनियों में 17.5 लाख करोड़ रुपये के मार्केट कैप के साथ रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे अधिक मूल्यांकन वाली कंपनी है।

नई दिल्ली। पिछला हफ्ता शेयर बाजार में निवेशकों के लिए मुनाफे वाला रहा है। इस कारण देश की टॉप 10 कंपनियों में से सात के बाजार मूल्यांकन में 1,33,707 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ है। इसमें सबसे अधिक फायदा रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ है।

पिछले हफ्ते की बात करें, तो शेयर बाजार का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा और बीएसई सेंसेक्स 990 अंक या 1.65 प्रतिशत बढ़कर 60,950 अंक पर बंद हुआ। टॉप 10 में सबसे अधिक फायदा रिलायंस इंडस्ट्रीज, टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इंफोसिस, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, एचडीएफसी और आईटीसी को हुआ है, जबकि आईसीआईसीआई बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर और भारती एयरटेल को नुकसान हुआ है।

किसको- कितना हुआ फायदा

रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 44,956 करोड़ रुपये बढ़कर 17,53,888 करोड़ रुपये हो गया है। एचडीएफसी बैंक का बाजार मूल्यांकन 22,139 करोड़ रुपये बढ़कर 8,34,517 करोड़ रुपये, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का बाजार मूल्यांकन 20,526 करोड़ रुपये बढ़कर 5,29,898 करोड़ रुपये, टीसीएस का बाजार मूल्यांकन 19,521 करोड़ रुपये बढ़कर 11,76,860 रुपये और आईटीसी का बाजार मूल्यांकन 9,861 करोड़ रुपये बढ़कर 4,38,538 करोड़ रुपये हो गया है।

एचडीएफसी का बाजार मूल्यांकन 16,156 करोड़ रुपये बढ़कर 4,52,396 करोड़ रुपये और इंफोसिस का बाजार मूल्यांकन 547 करोड़ रुपये बढ़कर 6,37,023 करोड़ रुपये पहुंच गया है।

किसको- कितना हुआ नुकसान

आईसीआईसीआई बैंक का बाजार मूल्यांकन 1,518 रुपये गिरकर 6,31,314 करोड़ रुपये, हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार मूल्यांकन 1,186 करोड़ रुपये गिरकर 5,92,132 करोड़ रुपये और भारती एयरटेल का बाजार मूल्यांकन 222 करोड़ रुपये गिरकर 4,54,182 करोड़ रुपये आ गया है।

भारतीय बाजारों में जमकर दांव लगा रहे विदेशी निवेशक, नवंबर में किया 15,280 करोड़ रुपये का निवेश

भारतीय शेयर बाजार को लेकर एफपीआई बुलिश नजर आ रहे हैं। नवंबर के पहले चार कारोबारी सत्रों में ही विदेशी निवेशकों ने 15000 करोड़ रुपये का निवेश कर दिया है। वहीं जानकारों का कहना है कि इसमें उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है।

नई दिल्ली। पिछले दो महीने तक लगातार बिकवाली करने के बाद विदेशी निवेश भारतीय शेयर बाजार में एक बार फिर से खरीदार बन गए हैं। नवंबर के पहले चार दिनों में ही विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार में 15,280 करोड़ रुपये का निवेश किया है। ये ऐसे समय पर हुआ है, जब अमेरिका के केंद्रीय बैंक की ओर से हाल में ब्याज दर को 0.75 प्रतिशत से बढ़ाया गया है और भविष्य में ब्याज दर को लेकर सख्ती कम करने की बात कही है। डिपोजिटरिज की ओर से जारी आंकड़ों में बताया गया कि विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPIs) 1-4 नवंबर के बीच 15,280 करोड़ रुपये का निवेश किया है, जबकि अक्टूबर में 8 करोड़ रुपये और सितंबर में 7,624 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी। इससे पहले अगस्त में विदेशी निवेशकों ने 51,200 करोड़ रुपये और जुलाई में 5,000 करोड़ रुपये का निवेश किया था।

जारी रह सकता है उतार- चढ़ाव

कोटक सिक्योरिटीज के इक्विटी रिसर्च हेड श्रीकांत चौहान ने समाचार एजेंसी पीटीआई को बताया कि ब्याज दरों के बढ़ने और जियो- पोलिटिकल परिस्थितियों में बदलाव के चलते एफपीआई की ओर से आने वाले निवेश में भविष्य में उतार- चढ़ाव देखने को मिल सकता है।

ब्याज दर अंतिम दौर में

मॉर्निंगस्टार इंडिया के एसोसिएट डायरेक्टर- मैनेजर रिसर्च हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा कि विदेशी निवेशक इस आशा में बाजार में निवेश कर रहे हैं कि ब्याज दरों में बढ़ोतरी अब अपने अंतिम दौर में है और आगे ब्याज दर में और अधिक इजाफा होने की संभावना कम है।

FPI अन्य बाजार में भी कर रहे निवेश

भारत के साथ विदेशी निवेशक अन्य बाजार में भी जमकर निवेश कर रहे हैं। नवंबर के महीने में दक्षिण कोरिया, थाईलैंड और फिलीपींस के शेयर बाजार में भी एफपीआई का प्रभाव सकारात्मक रहा है।

चीनी निर्यात का सरकार ने तय किया कोटा, अब इतनी चीनी विदेशों में भेज सकेंगे

सरकार की ओर से चीनी मिलों को 6 मिलियन टन चीनी निर्यात करने का अनुमति दे दी गई है। सरकार ने कहा है कि गन्ने के उत्पादन के अनुमान को देखते हुए ये फैसला लिया गया है।

नई दिल्ली। भारत सरकार ने चीनी के निर्यात को लेकर बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने चीनी मिलों को 6 मिलियन टन चीनी निर्यात करने का अनुमति दे दी है। इससे चीनी मीलों को बड़ी राहत के रूप देखा जा रहा है।

सरकार ने जानकारी दी कि देश में चीनी की कीमतों को स्थिर रखने और चीनी मिलों की वित्तीय स्थिति को ठीक रखने के लिए सरकार ने चीनी निर्यात करने का फैसला लिया है। सरकार ने गन्ने के उत्पादन के अनुमान के आधार पर ये निर्णय लिया है। फिलहाल सरकार की ओर से 6 मिलियन टन चीनी के निर्यात की अनुमति दी है।

दुनिया का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक देश

भारत मौजूदा समय में चीनी का सबसे उत्पादक और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चीनी का निर्यात देश है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (ISMA) ने पिछले महीने कहा था कि वित्त वर्ष 2022-23 में चीनी का उत्पादन 36.5 मिलियन टन रह सकता है, जो कि पिछले साल के उत्पादन के मुकाबले 2 प्रतिशत अधिक है। आगे एसोसिएशन की ओर से कहा गया था कि उत्तर प्रदेश में 12.3 मिलियन टन, महाराष्ट्र में 15 मिलियन टन और कर्नाटक में 7 मिलियन टन चीनी का उत्पादन होने का अनुमान है।

पिछले साल उच्चतम स्तर पर रहा था चीनी निर्यात

वैश्विक परिस्थितियां तेजी से बदलने के कारण भारत के चीनी निर्यात में तेज वृद्धि हुई है। पिछले वित्त वर्ष में (2021- 22) यह बढ़कर अपने सबसे उच्चतम स्तर 11 मिलियन टन पर पहुंच गया था। वहीं, इंडस्ट्री के एक्सपर्ट का अनुमान है कि सरकार दो किस्तों में 8 से 9 मिलियन टन चीनी निर्यात करने को लेकर मंजूरी दे सकती है। पहली किस्त में सरकार ने 6 मिलियन टन निर्यात की अनुमति दे दी है और दूसरी किस्त में 2 से 3 मिलियन टन

निर्यात की अनुमति मिल सकती है।न ज्यादातर लोगों के खाते में ब्याज का पैसा नहीं आया था। अब कर्मचारियों के भविष्य निधि (EPF) खातों में पैसा आना शुरू हो गया है।

EPFO ने कहा है कि कर्मचारियों को जल्द ही वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए अपनी पीएफ पासबुक में ब्याज का क्रेडिट अमाउंट दिखना शुरू हो जाएगा। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने पासबुक को अपडेट करना शुरू कर दिया है।

EPFO दे रहा इतना ब्याज

ईपीएफओ ने मार्च में 8.1 फीसदी की ब्याज दर की घोषणा की थी, जो चार दशक में सबसे कम है।हर साल सरकार द्वारा ईपीएफओ के लिए ब्याज दर घोषित की जाती है। पीएफ पर मिलने वाले ब्याज की पुष्टि वित्त मंत्रालय द्वारा की जाती है। अंत में श्रम मंत्रालय और ईपीएफओ कर्मचारियों के खातों में ब्याज जमा करने की प्रक्रिया पूरी करते हैं।

क्यों हुई इस साल देरी

इस बार देरी से पीएफ खातों में ब्याज जमा किया जा रहा है। इसको लेकर बहुत से ग्राहक चिंतित भी थे। कई लोग सोशल मीडिया पर भी इस बारे में अपनी चिंता जाहिर कर रहे थे। संदेह जताया जाने लगा था कि इस साल ब्याज दर क्रेडिट होगी या नहीं। उसके बाद वित्त मंत्रालय ने 5 अक्टूबर को स्पष्ट किया था कि किसी भी ग्राहक को ब्याज का नुकसान नहीं होगा और सबको पैसे दिए जाएंगे। वित्त मंत्रालय ने कहा कि सॉफ्टवेयर अपग्रेड के कारण ईपीएफ पासबुक में इंटरेस्ट का पैसा नहीं दिख रहा है।

ऐसे चेक करें अपना पीएफ बैलेंस

आप ईपीएफओ सदस्य पोर्टल के माध्यम से अपनी पीएफ पासबुक ऑनलाइन एक्सेस कर सकते हैं। यहां आप बैलेंस अमाउंट के अलावा, वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए ब्याज की जमा राशि को भी देख सकते हैं।

पोर्टल में लॉग इन करने के लिए आपको अपने यूएएन (आपके खाते को आवंटित यूनिवर्सल अकाउंट नंबर) और पासवर्ड का उपयोग करना होगा।

यदि आपने पोर्टल पर अपना यूएएन पंजीकृत या एक्टिव नहीं किया है, तो आपको पहले ऐसा करना होगा।

ईपीएफओ आपके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर हर महीने जमा किया जाने वाला अंशदान जमा एसएमएस के जरिए बताता है। इसमें यूएन नंबर का जिक्र रहता है। आपकी सैलरी स्लिप पर भी यूएन नंबर का उल्लेख किया जाता है।

आप अपने रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर से 'EPFOHO (आपका) UAN' लिखकर 7738299899 पर टेक्स्ट मैसेज भेजकर भी अपना पीएफ बैलेंस चेक कर सकते हैं। हालांकि इस मैसेज में कुल राशि का जिक्र होगा, ब्याज क्रेडिट हुआ या नहीं, इसकी जानकारी नहीं होगी।

आप अपना बैलेंस जानने के लिए 011-22901406 या 9966044425 पर मिस्ड कॉल भी दे सकते हैं। लेकिन इसके माध्यम से भी आपको इस बात की जानकारी नहीं मिल पाएगी कि ब्याज क्रेडिट हुआ है या नहीं।

सड़क हादसे में पूर्व आईबी अधिकारी आरएन कुलकर्णी की मौत, पुलिस ने जताई हत्या की आशंका

एनटीवी न्यूज

कर्नाटक के मैसूर में शुक्रवार को सड़क दुर्घटना में पूर्व आईबी अधिकारी आर एन कुलकर्णी (R N Kulkarni) की मौत हो गई थी। इस घटना को शुरुआत में एक सड़क दुर्घटना माना जा रहा था। हालांकि अब इस घटना में एक नया मोड़ आ गया है।

मैसूर। कर्नाटक के मैसूर में शुक्रवार को पूर्व आईबी अधिकारी आर एन कुलकर्णी (R N Kulkarni) की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। इस घटना को शुरुआत में एक सड़क दुर्घटना माना जा रहा था। हालांकि अब इस घटना में एक नया मोड़ आ गया है। पुलिस ने रविवार को इस घटना पर बताया कि 83 साल के पूर्व अधिकारी हमेशा की तरह मैसूर विश्वविद्यालय के मनासा गंगोत्री परिसर में सैर पर निकले थे, उसी दौरान एक वाहन ने उनको टक्कर मार दी। घटना के बाद कुलकर्णी को अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

जांच के लिए तीन टीमें गठित

पुलिस आयुक्त चंद्रगुप्त ने इस मामले पर जानकारी देते हुए कहा कि पूछताछ के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि यह दुर्घटना नहीं बल्कि सुनियोजित हत्या थी। उन्होंने आगे कहा कि सहायक पुलिस आयुक्त नरसिंह राजा के नेतृत्व में मामले की जांच के लिए तीन टीमें गठित कर दी गई है। पुलिस आयुक्त ने आगे बताया कि जिस कार से कुलकर्णी को टक्कर मारी गई थी उस पर नंबर प्लेट नहीं थी, जिसके बाद ही उन्हें शक हुआ कि यह हादसा नहीं हत्या है। इस मामले में पुलिस को अन्य कई महत्वपूर्ण सुराग भी मिले है। हालांकि पुलिस ने इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं दी है।

कुलकर्णी की किताब का निर्मला सीतारमण ने किया था विमोचन

मालूम हो कि इंटेलिजेंस ब्यूरो (IB) में 35 साल तक अपनी सेवाएं देने के बाद वह 23 साल पहले ही सेवानिवृत हो गए थे। भारत में आतंकवाद को लेकर पूर्व अधिकारी कुलकर्णी ने एक किताब लिखी थी, जिसका विमोचन केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने किया था। मालूम हो कि रिटायर्ड आईबी अधिकारी ने अपने शुरुआती दिनों में एक शिक्षक की नौकरी भी की थी। उन्होंने भारतीय राजनयिक मिशनों के साथ-साथ कारपोरेट जगत में भी काम किया है।

तीन दिनों तक भारी बारिश का अलर्ट, इन राज्यों में होगी बर्फबारी

मौसम विभाग (IMD) ने आने वाले दिनों के मौसम को लेकर भविष्यवाणी की है। पहाड़ी राज्यों में बारिश के साथ बर्फबारी होने वाली है, जिसकी वजह से उत्तर भारत में ठंड में बढ़ोतरी होगी। मौसम विभाग के अनुसार, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, गिलगित-बाल्टिस्तान और हिमाचल प्रदेश में 6, 7, 9 और 10 नवंबर को मध्यम बारिश और बर्फबारी होगी। इसके अलावा, उत्तराखंड में छह और सात नवंबर को बर्फबारी और बारिश होगी। वहीं, पंजाब में छह और सात नवंबर को हल्की बारिश होने की संभावना है। वहीं, कश्मीर घाटी में छह नवंबर को बहुत भारी बारिश और बर्फबारी के आसार हैं। वहीं, दक्षिण भारत की बात करें तो यहां अब भी कई राज्यों में बारिश जारी है। मौसम विभाग के अनुसार, तमिलनाडु, पुडुचेरी, कराईकल, केरल और माहे में छह नवंबर को मध्यम बारिश होगी। इसके बाद से बारिश की गतिविधियों में कमी आएगी।

अगले तीन दिनों तक होगी बरसात

अंडमान और निकोबार में छह से आठ नवंबर तक तीन दिनों तक बरसात होने वाली हे। इसके अलावा, 9 नवंबर, 2022 के आसपास श्रीलंका तट से दूर दक्षिण-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर एक निम्न दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है। इसके बाद के 48 घंटों के दौरान संभावित मामूली तीव्रता के साथ उत्तर-पश्चिम की ओर तमिलनाडु-पुडुचेरी तटों की ओर बढ़ने की संभावना है।

रेलवे पुल से टकराया ट्रक, मुंबई से दक्षिण जाने वाले रूट पर यातायात ठप

एनटीवी न्यूज

ट्रक की टक्कर इतनी जोरदार थी कि रेलवे पुल का पूरा खंभा टूट कर नीचे गिर गया।

मुंबई। सायन में किंग सर्कल स्टेशन के पास रविवार को सुबह एक ट्रक पुल से टकरा गया, जिससे रेलवे पुल का पिलर क्षतिग्रस्त हो गया। इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ, लेकिन ट्रैफिक प्रभावित हो गया है। घटना की जानकारी मिलते ही किंग सर्कल पुलिस स्टेशन व ट्रैफिक पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और ट्रैफिक क्लियर करने का प्रयास शुरूकर दिया है। पुलिस के अनुसार रविवार सुबह किंग सर्कल स्टेशन के पास पुल से एक ट्रक टकरा गया। ट्रक की टक्कर इतनी जोरदार थी कि रेलवे पुल का पूरा खंभा टूट कर नीचे गिर गया। इससे मुंबई से दक्षिण की ओर जाने वाला यातायात पूरी तरह से अवरुद्ध हो गया। इस हादसे में रेलवे पुल को काफी नुकसान पहुंचा है। इस घटना के बाद दुर्घटनाग्रस्त ट्रक को हटाने का काम किया जा रहा है।

इनसाइड

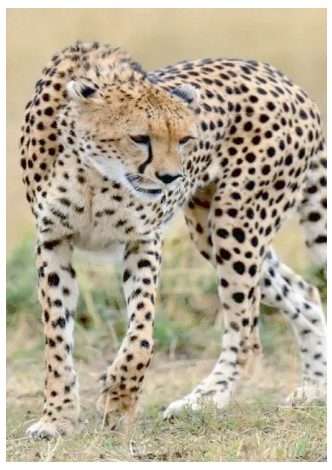

प्रधानमंत्री कुनो नेशनल पार्क में दो चीतों को बड़े बाड़े में शिफ्ट करने पर प्रसन्न

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि अनिवार्य क्वारंटाइन के बाद कुनो नेशनल पार्क के आवास के अनुकूलन के लिए दो चीतों को बड़े बाड़े में स्थानांतरित कर दिया गया है।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि अनिवार्य क्वारंटाइन के बाद कुनो नेशनल पार्क के आवास के अनुकूलन के लिए दो चीतों को बड़े बाड़े में स्थानांतरित कर दिया गया है। उन्होंने इस संबंध में वीडियो ट्विटर पर साझा करते हुए कहा-बढ़िया खबर ! मुझे बताया गया कि अनिवार्य क्वारंटाइन के बाद 2 चीतों को कुनो के एक बड़े बाड़े में स्थानांतरित कर दिया गया है। अन्य को भी जल्द ही स्थानांतरित कर दिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि सभी चीते स्वस्थ हैं। सक्रिय हैं और अच्छी तरह से तालमेल बिठा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 17 सितंबर को अपने जन्मदिन पर नामीबिया से लाए गए आठ चीतों को मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले के कुनो नेशनल पार्क में प्रवेश कराया था। शनिवार को इन्हीं में से दो चीतों को कुनो नेशनल पार्क के एक बड़े बाड़े में स्थानांतरित किया गया है।

देश के पहले मतदाता श्याम सरन नेगी का निधन, मुख्य चुनाव आयुक्त श्रद्धांजलि देने रवाना

नई दिल्ली। देश के पहले मतदाता श्याम सरन नेगी ने शनिवार को सुबह अपने घर पर अंतिम सांस ली। वह काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। अपनी अस्वस्थता के चलते ही बुधवार को अपने घर में ही उन्होंने मतदान किया था। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार श्याम सरन नेगी के शोक संतप्त परिवार से मिलने और उनके पैतृक गांव में व्यक्तिगत रूप से अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए कल्पा (किन्नौर) के लिए रवाना हुए हैं।

हवाई जहाज की तरह ट्रेनों में भी लगेंगे ब्लैक बाक्स, हादसे के बाद दूसरे को दोष देना नहीं होगा आसान

हादसों की सही पड़ताल के लिए ट्रेनों में हवाई जहाज की तरह ही ब्लैक बाक्स लगाया जा रहा है। ट्रेनों के हिसाब से थोड़ा फेरबदल कर इसे डिजाइन किया गया है। रेल मंत्रालय की ओर से पूर्वोत्तर जोन को एलसीवीआर लगाने की अनुमति दी गई है।

नई दिल्ली: हादसों की सही पड़ताल और रिपोर्ट हासिल करने के लिए ट्रेनों में हवाई जहाज की तरह ही ब्लैक बाक्स लगाया जा रहा है। ट्रेनों के हिसाब से थोड़ा फेरबदल कर इसे डिजाइन किया गया है। रेल मंत्रालय की ओर से पूर्वोत्तर जोन को लोको कैब वाइस एंड विजुलअ रिकार्डर (एलसीवीआर) लगाने की अनुमति दी गई है। पहले चरण में करीब तीन हजार डिवाइस लगाए जाएंगे। आगे सभी ट्रेनों में लगाने की तैयारी है।

इंजन में लगेगा एलसीवीआर डिवाइस

एलसीवीआर को इंजन में लगाया जाएगा, इससे ट्रेन हादसों को रोकने और सफर को आसान बनाने में मदद मिलेगी। लगातार कई हादसों के बाद उसके कारणों की पड़ताल करने वाली टीम के सामने प्रमाण को लेकर दिक्कतें आ रही थीं। ऐसी कई घटनाओं के बाद रेलवे ने हवाई जहाज की तरह ब्लैक बाक्स लगाने का निर्णय लिया, जिसके बाद एलसीवीआर डिवाइस तैयार किया गया।

फेशियल रिकाग्निशन साफ्टवेयर का होगा इस्तेमाल

मंत्रालय के अधिकारी ने बताया कि इसमें वीडियो एनालिटिक एवं फेशियल रिकाग्निशन साफ्टवेयर का इस्तेमाल किया गया है। इसमें चंद सेकेंड में ही पूरा डाटा स्कैन हो जाएगा। यह डिवाइस कंट्रोल रूम और ट्रेन के बीच मध्यस्थ की तरह काम करेगा। ट्रेन की सूचना भी कंट्रोल रूम को देगा। ट्रेन के चलने के समय लोको पायलट को ट्रैक की स्थिति, ट्रेन की आवाज एवं कैमरे के माध्यम से इंजन के आसपास की हलचल का पता चलता रहेगा। पूरे संचालन की वीडियो रिकार्डिंग होती रहेगी, ताकि बाद में जरूरत पड़ने पर उसका विश्लेषण किया जा सके।

डीजल-इलेक्ट्रिक दोनो इंजनों में लगेगा डिवाइस

डिवाइस को इस तरह विकसित किया गया है कि डीजल एवं इलेक्ट्रिक दोनों इंजनों में लगाया जा सकता है। यह आडियो एवं वीडियो दोनों तरीके से काम करेगा। इससे पटरी के साथ-साथ लोकोमोटिव में ड्राइवर की गतिविधियों पर भी नजर रखना आसान हो जाएगा। आपात स्थिति में 30 सेकेंड तक अगर कोई हलचल नहीं देखी गई तो अलर्ट की लाइट अपने आप जलने लगेगी। अगले दस सेकेंड के अंदर आडियो सूचना आ जाएगी।

हम वतन के बेवफा होने के लिए नहीं जन्मे थेः डॉ. इन्द्रेश कुमार

एनटीवी संवाददाता

जम्मू। मुस्लिम राष्ट्रीय मंच द्वारा शनिवार को जम्मू के सिदड़ा में आयोजित एक कार्यक्रम में मंच के संरक्षण एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य डॉ. इन्द्रेश कुमार ने कहा कि हम इसीलिए नहीं जन्मे थे कि गोलियां हमें भूनती रहेंगी, औलाद के हाथ कलम नहीं होगी, रोजगार नहीं होगा बल्कि पत्थर होगा। हम वतन के बेवफा होने के लिए नहीं जन्मे थे कि हम हिन्दुस्तान जिन्दाबाद नहीं बोलेंगे, भारत माता की जय नहीं बोलेंगे, हम इसलिए पैदा नहीं हुए थे कि तिरंगा नहीं उठायेंगे, हम इसलिए पैदा नहीं हुए थे कि लोग उजड़ते रहेंगे और हम राजनीति करते रहेंगे बल्कि इसलिए जन्मे थे कि अपने मजहब को ठीक प्रकार समझें और उस पर चलें। अपने, अपने वतन के प्रति बफादार और ईमान वाले बने इसलिए जन्मे थे।

उन्होंने आगे कहा कि इस देश का मुसलमान जनती बने जहुनमी न बने, वह इस वतन का इमानवाला बने बेईमान न बने, वह अपने मजहब को ठीक से समझे और उस पर चले यही हमारा कर्म और उद्देश्य होना चाहिए। जब मां के पैरों में जनत कही है तो तालाक क्यों, जब खुदा ने कहा कि तलाक सबसे ज्यादा ना पसंद है तो खुदा के साथ बेरुखी क्यों, जो खुदा का सगा नहीं हो सकता वो इन्सान का सगा होगा, उसका इम्तिहान कौन देगा और इसलिए मैंने कहा कि यह सियासी और मजहबी लोगों की कांफ्रेंस नहीं है जिन्होंने हमें इस्लाम का भी बईमान बनाया, रसूल से भी दूर किया, खुदा का भी बेईमान बनाया और हमारे किरदार को मारने, भटकने और उजड़ने के लिए बेबस कर दिया। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर अब शांति और विकास की राह पर चल पड़ा है और वह दिन दूर नहीं है जब यह फिर से जन्नत कहलायेगा। जिन्होंने इसे उजाड़ा है और उजड़ने दिया है उन्हें न तो लोग माफ करेंगे, न वक्त और न ही ऊपर वाला।

उन्होंने कहा कि पीओजेके भारत का था, है और पुनः होकर रहेगा, इसको दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती।

इस मौके पर एसटी सचिव डा. शाहिद इकबाल चौधरी, उपकुलपति शेरे कश्मीर विश्वविद्यालय जम्मू डा. जे.पी. शर्मा, बक्फ बोर्ड जम्मू-कश्मीर के सदस्य वरिष्ठ पत्रकार सोहेल काजमी व साधु संत समाज के महामंत्री श्री राजेश गिरि महाराज विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर मुस्लिम राष्ट्रीय मंच जम्मू-कश्मीर के संयोजक मीर नजीर अहमद ने भी मंच की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

उत्तराखंड में दो सौ इलेक्ट्रिक और इतनी ही सीएनजी बसों का किया जाएगा संचालन

परिवहन मंत्री ने कहा, रोडवेज 22 करोड़ के फायदे में, मुझे मिला था तीन सौ करोड़ के घाटे में।

एनटीवी संवाददाता

परिवहन मंत्री चंदनराम दास रविवार को निर्माणाधी आईएसबीटी बस स्टेशन रुद्रपुर का निरीक्षण करने पहुंचे। बस में खुद यात्रियों से सुविधाओं की जानकारी ली। कहा कि निगम को 600 बसों का बेड़ा जल्द मिलेगा। अन्य राज्यों के लिए बसों का संचालन किया जाएगा।

रुद्रपुरः रोडवेज परिवहन निगम बेहतर सेवाओं और प्रबंधन के साथ अब फायदे में है। जब विभाग मिला था तब 300 करोड़ के घाटे में विभाग चल रहा था, अब 22 करोड़ के फायदे में है। यह बात रोडवेज बस स्टेशन पहुंचे परिवहन मंत्री चंदनराम दास ने निर्माणाधीन आईएसबीटी बस स्टेशन के निरीक्षण के दौरान कहीं।

परिवहन मंत्री ने कहा कि यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलें, इसका पूरा ध्यान रखा जा रहा है। प्रदेश में 200 इलेक्ट्रिक और इतनी ही सीएनजी बसों का संचालन किया जाएगा। मंत्री ने कहा परिवहन विभाग डिजिटल हो इसके लिए बीएलडी एप के माध्यम से बसों को लोकेशन उनकी फिटनेस के बारे में जानकारी ली जा सकेगी।

परिवहन मंत्री ने कहा कि सबसे अच्छी बात यह है कि एप के माध्यम से एक माह पूर्व ही फिटनेस खत्म होने की पूर्व सूचना वाहन स्वामी को मिल सकेगी। परिवहन मंत्री ने बस में खुद यात्रियों से सुविधाओं की जानकारी ली। कहा कि निगम को 600 बसों का बेड़ा जल्द मिलेगा। अन्य राज्यों के लिए बसों का संचालन किया जाएगा। ताकि उत्तराखंड परिवहन निगम का विस्तार हो सके और आय बढ़े।

परिवहन मंत्री ने आईएसबीटी रोडवेज के निर्माण में अतिक्रमण की बाधा के सवाल पर कहा कि सरकार की मंशा है कि किसी का रोजगार न उजड़े इसके हर स्तर पर प्रयास किये जाएंगे।

हरिद्वार, रुड़की जहां नए आईएसबीटी बनेंगे वहीं अल्मोड़ा, भवाली को डिपो के तौर पर विकसित किये जाएंगे। पर्वतीय जिलों के लिए यात्रियों को रुदपुर से सीधे समय पर बसें मिलें इसकी जल्द व्यवस्था होगी।इस मौके पर बस स्टेशन बना रही निर्माण कंपनी के निदेशक इंदर कपूर ने मंत्री को बस स्टेशन में बनाये जा चुके प्रथम चरण के निर्माण कार्यों की जानकारी दी।

साइरस मिस्त्री कार हादसे के वक्त गाड़ी चलाने वाली डॉक्टर के खिलाफ पुलिस केस

साइरस मिस्त्री कार दुर्घटना में मुंबई की शीर्ष स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ अनाहिता पंडोले के खिलाफ मामला दर्ज। भारत के सबसे प्रतिष्ठित व्यापारिक परिवारों में से एक शापूरजी पल्लोनजी ग्रुप के वंशज साइरस मिस्त्री की सितंबर में महाराष्ट्र के पालघर में एक कार दुर्घटना में मौत हो गई थी।

मुंबई। भारत के सबसे प्रतिष्ठित व्यापारिक परिवारों में से एक शापूरजी पल्लोनजी ग्रुप के वंशज साइरस मिस्त्री की सितंबर में महाराष्ट्र के पालघर में एक कार दुर्घटना में मौत हो गई थी। कासा पुलिस ने दुर्घटना के दौरान गाड़ी चला रही अनाहिता पंडोले के खिलाफ टाटा संस के पूर्व चेयरमैन साइरस मिस्त्री की मौत के मामले में धारा 304 (ए), 279, 336, 338 के तहत मामला दर्ज किया है।

डॉक्टर अनाहिता पंडोले चला रही थी गाड़ी

मिस्त्री की मर्सिडीज डॉक्टर अनाहिता पंडोले चला रही थी और दुर्घटना के वक्त कारोबारी पीछे बैठे था। पुलिस ने मामले में अनाहिता के पति डेरियस पंडोले का बयान लेकर कर मामला दर्ज किया है। कार दुर्घटना में बाल-बाल बचे डेरियस पंडोले को पिछले महीने के अंत में मुंबई के एक अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी।

दरीयस पंडोले ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि दुर्घटना के वक्त उनकी पत्नी स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ अनाहिता पंडोले कार चला रही थीं। वह उनके साथ आगे की सीट पर बैठे थे। पीछे की सीट पर सायरस मिस्त्री और उनके भाई जहांगीर पंडोले बैठे हुए थे। वह लोग मर्सिडीज बेन्ज कार में सवार हो गुजरात से महाराष्ट्र लौट रहे थे।